माह जनवरी 2020 से मार्च 2022 वर्ष 8 अंक 1 मुल्य 30

साहित्य सरोज

RNI No- UPHIN/2017/74520 साहित्यिक पत्रिका

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष–8 अंक –1

RNI No- UPHIN/2017/74520

माह अप्रैल 2021 से जून 2021

संस्थापिका –: स्व०श्रीमती सरोज सिंह

प्रधान संपादिका –: श्रीमती कान्ति शुक्ला ''उर्मि'' भोपाल

प्रकाशक –: अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

संपादिका –: श्रीमती रेनुका सिंह गाजियाबाद

प्रधान कार्यालय –:

मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो० 9451647845

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट–: https://www.sarojsahitya.page/

मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर- साहित्य सरोज

प्रति अंक –३०रूपये मात्र, चार वर्ष शुक्ल –: ५०० रूपये मात्र, आजीवन ५००० रूपये मात्र

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रघुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ०प्र० पिन २३२३२७ द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयॉ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष–: कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह''अखंड गहमरी''

प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर

चित्र –गूगल ईमेज द्वारा।

साहित्य सरोज के पाठक सदस्य बने और मोबाइल अपल्किेशन का प्रयोग कर सीधे साहित्य सरोज एवं साहित्यकारो की दुनिया में रचना भेजें।

साहित्य सारोज की स्ंथापिका श्रीमती सरोज सिंह की प्रथम पुण्य तिथि 02 अप्रैल को मनावे विश्व जननी हरियाली दिवस के रूप में करें एक पौधा मॉं का समर्पित!

अखंड गहमरी

आपके नाम

साहित्य सरोज पत्रिका के आठवें वर्ष का प्रथम अंक आप सभी के हाथों में पहुॅंच चुका है। विगत वर्ष से अभी तक हम कोरोना महामारी के कारण बंद हुए बाजार व्यवस्था से उभर नहीं पाये हैं। यही कारण है कि लाख प्रयास के बाद भी हम इस पत्रिका को मुद्रित नहीं करा पा रहा है।

कोराना काल के प्रथम लहर से लेकर आज तक साहित्य सरोज पत्रिका के यह प्रयास किया है कि आप घर में सुरक्षित रहते हुए भी न सिर्फ अपने विचारों को एक दूसरे तक पहुॅंचाने में सफल रहे बल्कि आप की मनोदशा भी उच्च स्तर पर रहे।

साहित्य सरोज की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह के पंचम पुण्य तिथि ०२ अप्रैल से दिन यह निर्णय किया गया है कि पत्रिका सिर्फ आपके लेखन ही नहीं वरण आपके सर्वर्गिण विकास हेतु भी कार्य करे और आपको समाज में एक मुकाम हासिल करने में मदद करे। महिला को स्वालंबी बनाने एवं अपनी सुरक्षा स्वंय करने के उद्वेश्य से पत्रिका विभिन्न शहरों का भ्रमण कर वहॉं अपने कार्यालय भी खोलने का निर्णय की है।

साहित्य सरोज पत्रिका वर्ष २०२२ –२२ को महिला उत्थान वर्ष के रूप में मना रही है हमें पूर्ण विश्वास है कि हम अपने इस उद्वेश्य में भी आपके सहयोग से सफल होगें।

पत्रिका न सिर्फ अपने द्वारा आयोजित गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन में व्यापक परिवर्तन करने जा रही है, बल्कि साहित्य सरोज पत्रिका के प्रति माह मुद्रण के लिए भी विचार कर रही है जिसमें सदस्यता अभियान चलाना एक प्रमुख कार्य होगा।

इस अंक में

हमने कार चलाना सीखा	व्यंग्य कहानी	सुभाष चंदर	04
कान्ति का कोना	काव्य	कान्ति शुक्ला	09
चरखारी वाली काकी	कहानी	अरूण अर्णव खरे	10
फरिश्ता नहीं	कविता	लता यादव	13
बसंत	कविता	सुधा बसोर	14
नारी हूँ मैं	कविता	सीमा रानी मिश्रा	14
अन्नपूर्णा	कहानी	संतोष शर्मा शान	15
तेरी बिंदिया रे	कहानी	रश्मि लहर	16
कैसे ध्वस्त हुआ चक्रव्यूह	चुनावी बातें	साहित्य सरोज	17
मेरी यादगार यात्रा	संस्मरण	पूनम झा	20
परतंत्र	कविता	राजेश सिंह	21
प्रेम परीक्षा	कविता	विजय कनौजिया	21
अब होने लगी विभिषण	लेख	अखंड गहमरी	22
सम्मानालय	व्यंग्य	अनीता श्रीवास्तव	24
वापसी	कहानी	रेखा दुबे	26
चलना होगा	कविता	महेन्द्र	29
हर्षित मन	कविता	डॉ सरला सिंह	29
वफा की	कविता	ख्शबू शर्मा	29
देश के मुर्दे	व्यंग्य कहानी	राम भोले शर्मा	30
द्रौपदी का कर्ज	कहानी	डॉ आरती बाजपेयी	33
मुर्ख दिवस मनाओ	व्यंग्य	विवेक रंजन श्रीवास्तव	33
एक ध्यानी चित्रकार का जीवन	कला और संस्कृति	प्रवुद्वो घोष	34
पसंदीदा रंग	कहानी	स्वीटी सिंघल	35

हास्य कहानी

हमने कार चलाना सीखा

हमारा अपने बारे में काफी पुख्ता किस्म का ख्याल है कि हम टेक्निकल मामलों में बहुत ज्यादा एक्सपर्ट टाइप के बन्दें हैं और ऐसे कामों को काफ़ी जल्दी सीख जाते हैं। मसलन बल्ब बदलना सीखने में हमने सिर्फ़ आठ दिन लिये। इस अवधि में हमने केवल तीन बार बिजली के झटके खाये, पाँच बल्ब तोड़े और जमीन पर तो सिर्फ़ दो बार ही गिरे। उसमें भी हमारा सिर्फ़ एक ही दांत टूटा, दूसरा सिर्फ़ हिल कर ही रह गया। ऐसा ही रिकार्ड हमारा वाहन चलाना सीखने के बारे में है। हमने साइकिल चलाना बमुश्किल डेढ़-दो साल में सीख लिया था। स्कूटर चलाना सीखने में हमें जरूर तीन साल और चार स्कूटर लगे थे। चौथे साल में चौथे स्कूटर को कबाड़ी को देने के बाद हमें स्कूटर चलाना भी आ गया।

आज हालात ये हैं कि हम अपने घर से दफ़्तर तक बे नागा स्कूटर से ही जाते हैं। दो किलोमीटर की दूरी तय करने में हम बमुश्किल एक घन्टा खर्च करते हैं। जबकि पैदल चलने में हमें चालीस मिनट लगते हैं। पर हम स्कूटर पर ही चलना पसंद करते हैं क्योंकि सयाने कहते हैं कि अपने वाहन की सवारी का मज़ा ही अलग होता है।

इधर कुछ दिनों से हम कार चलाने के बारे में गंभीरता से सोच रहे थे तो इसके पीछे कई कारण थे। पहला ये कि मन्नू की मम्मी हमको सुबह-शाम दोनों टाइम याद दिलाती हैं कि उनकी दोनों बहनों के पति हमसे बेहतर हैं क्योंकि वे अपनी कार चलाते हैं और अपनी पत्नियों यानी हमारी सालियों को घुमाते हैं। उनकी बहनें रोज यहां-वहां घूमने की कहानियां सुनाती हैं और आखिर में ये कहना नहीं भूलती कि जीजाजी कब तक इसे टुटहे स्कूटर पर तुम्हें घुमाते रहेंगे, कार से कब चलेंगे। अपनी कार में चलने का तो मज़ा ही अलग है वगैरहा-वगैरहा।

दूसरा पुख्ता कारण यह था कि हमारे दफ्तर में, हमारे बराबर के सभी अफसरों के पास कार थी, एक हम ही स्कूटर से आते थे। उसके कारण हमारा स्टैंडर्ड का पारा उनके मुकाबले डाऊन आ रहा था। तीसरा सबसे चुभने वाला कारण यह था कि पड़ोस वाली मिसेज़ शर्मा ने भी कार खरीद ली थी और वह घड़ल्ले से हमारे सामने से कार से गुज़रती थी और हमें स्कूटर की सवारी करते देखकर, हमारी तरफ जैसी मुस्कान वो फेंकती थी, उससे हम जरूरत से ज्यादा घायल हो जाते थे।

यह आखिरी कारण हमें काफ़ी भारी पड़ रहा था। सो हम कार खरीदना चाहते और उसे जल्द से जल्द चलाना सीखना भी चाहते थे। एक दिन हमने इस सम्बंध में, अपने दोस्त वर्माजी से बात की। सारा दुखड़ा सुनाया। सारे कारण गिनाये। बीवी और साथी अफसरों के तानों वाली बात से तो वह खास प्रभावित नहीं हुए पर मिसेज़ शर्मा की तीखी मुस्कान वाली बात उन्हें भी चुभ गयी।

सुन्दर स्त्री वह भी दूसरे की, किसी भी कारण से मित्र को देखकर मुस्कराये तो मित्र के पेट में दर्द होना स्वाभाविक है। सो उन्होंने अपने दर्द के इलाज के लिए ठोस कदम उठाया और हमें बिन मांगी सलाह दी कि हमें एक पुरानी कार खरीद लेनी चाहिए। हमने पूछा, पुरानी क्यों? नयी क्यों नहीं ? उन्होंने फर्माया," पुरानी कार से ही सीख लो। दो-चार जगह ठुक भी गयी तो दर्द कम होगा। डेंट-पेंट भी पुरानी कार का सस्ता पड़ेगा।' बात हमारी समझ में आ गयी।

हमने बैंक से पैसे निकलवाये और उसी दिन कार बाज़ार से एक बढ़िया कार खरीद ली। कार वाकई बढ़िया थी क्योंकि पुरानी थी। मतलब ओल्ड इज़ गोल्ड की कसौटी पर खरी उतर चुकी थी। **98** मॉडल की मारूति जेन। कार तो खरीद ली पर असली समस्या बाकी थी यानी कार चलाने की ट्रेनिंग। वर्माजी ने यहाँ भी दोस्ती निभाई बोले -," यार कार चलाना तो बहुत आसान है, समझ लो, स्कूटर से भी आसान। ना बैलेंस बनाने की जरूरत। ना किसी से टकराने पे चोट लगने का डर। डरेगा तो सामने वाला।' हमें दिल ही दिल में तसल्ली हुई। पर अभी असली सवाल सामने था। सो हमने उसे वर्मा जी के हुजूर में पेश किया -," यार वो सब तो ठीक है पर हमें कार चलाना सिखायेगा कौन ? वर्मा जी बोले ,"हम सिखायेगें और कौन सिखायेगा ? हमने पूछना चाहा कितने साल में, फिर याद आया कार चलाना स्कूटर चलाने से भी आसान है सो जल्दी सीख जायेंगे। सो प्रश्न में संशोधन कर लिया, तो तुम हमें कितने महीनों में कार चलाना सिखा दोगे ? वर्मा जी हो हो करके हंसे, बोले," कितने महीनों में, अरे, सुबह सिखायेंगे, दोपहर तक प्रेक्टीस करना, देखना शाम को मार्केट में कार चलाते हुए दीखोगे।'

हमारी प्रसन्नता का पारावार न रहा। पर दोस्तों के सामने खुशी प्रदर्शित करना, वो भी वर्माजी जैसे मुफ्तखोरों के सामने, कितना नुक्सानदेह साबित हो सकता है, वह हम जानते थे। सो हमने खुशी छिपाई और सीधा सा सवाल दिखा दिया -," अच्छा ये बताओ, सिखाने की फीस क्या लोगे ?' वर्माजी हंसे, बोले," क्या बात करते हो यार, भला तुमसे फीस लूंगा। तुम तो बस अनारकली बार में पार्टी दे देना बस। वो भी तब जब ठीक से चलाने लगो, अब खुश।' मैंने खुश होने से पहले हिसाब लगाया। अनारकली बार का दो बंदों का खर्चा ज्यादा से ज्यादा 700 रुपये। कार ड्राइविंग स्कूल की फीस

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

1500 रुपये। नेट **800** रुपये की बचत। इस बचत ने मुझे खुश होने का अवसर दिया। सो मैं खुश हो लिया। पार्टी का वादा कर लिया। इसके बाद वर्माजी ने कार स्टार्ट की और घर तक ले आये। कहना ना होगा कि मैं चुप-चाप वर्माजी के पैरों की हरकतें देखता रहा। वर्मा जी समझ गये कि मैं कार चलाने के फंडे सीख रहा हूँ। ज्यादा सीख गया तो पार्टी मारी जायेगी। इस डर से उन्होंने मिसेज़ शर्मा की बात छेड़ दी। मैं अटक गया और काफ़ी देर तक पहली मुस्कान और मेरे कार चलाने के बाद आने वाली संभावित मुस्कान में भटक गया। इतनी देर में घर आ गया।

वर्मा जी कार घर छोड़कर चले गये। वर्माजी गये, श्रीमती जी आ गयीं। श्रीमती जी पहले गाड़ी देखकर खुश हुईं। फिर कुशल मैकेनिक की सी दृष्टि से गाड़ी का नख-शिख परीक्षण करने लगीं, उसके लगभग दस मिनट बाद उन्होंने मुंह बिचकाते हुए घोषणा की," पक्की बात है, लुट कर आये हो। शोरूम वाले ने नयी बताकर तुम्हें पुरानी गाड़ी भिड़ा दी।' उससे पहले कि वह मेरी नासमझी की शान में कसीदे पढ़ती और बात का तोड़ कुछ ऐसी बात पर करतीं, हाय राम, इस नासमझ आदमी से शादी करके मेरे तो भाग्य ही फूट गये वगैरहा। मैंने सारा खेल पहले ही भांपकर उनके इन्सपेक्शन की बात को हल्का कर दिया। बोला -," देवी जी, यह गाड़ी मैंने पुरानी ही खरीदी है। मुझसे ही पूछ लेतीं तो इतनी देर इंसपेक्शन ना करना पड़ता।" श्रीमती जी को अपनी मेहनत खराब होने का क़ाफ़ी दुःख हुआ।

फिर भी वह बोली -," पर क्यों खरीदी पुरानी कार। मेरी तो नाक कटा दी। अब हम क्या इस खटारा कार से चलेंगे। छाया, सीमा, रीता सब क्या कहेंगी- लो आ गयी पुरानी कार वाली। बेइज्जती कराके रख दी।' वह अभी और टमकोले सुनाने वाली थीं कि हमने उन्हें कारण समझा दिया कि हमने पुरानी कार क्यों खरीदी। हमारे बताये कारण से वह संतुष्ट हो गयी। उसके बाद वह कार की पूजा के लिए हल्दी-रोली लेने चली गयी। हम निश्चिंत हो दोस्तों को खबर सुनाने चले गये।

रात को जब हम लौटे तो श्रीमती जी का मूड बहुत रोमांटिक था। आते ही मुस्कराई, फिर गलबहियां डालकर बोलीदृ," क्यों आर्यपुत्र, आप कितने महीनें में गाड़ी चलाना सीख जाओगे ? देखो, इस बार स्कूटर की तरह सालों का प्रोग्राम मत बनाना। जल्दी सीख जाना, मुझे अपनी सारी सहेलियों के घर जाना है अपनी गाड़ी से। समझ रहे हो ना।' मैं समझ गया कि श्रीमती जी मेरी सीखने की क्षमता पर अंगुली उठा रही हैं। सो मैं थोड़ा पिनककर बोला," बेगम, डायलॉग मत मारो। देखना हम कल शाम ही लौंग ड्राइव पर चलेंगे। सीधे दिल्ली के इंडिया गेट।' तैयार रहना।

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

अब चौंकने की बारी श्रीमती जी की थी ,"ये क्या कह रहे हो जी, कल२ इत्ती जल्दी२. धत२ मज़ाक कर रहे हो ? उनके स्वर में संशय था। मैं बोला," मेरी बात पर विश्वास करो। वर्माजी बता रहे थे। कार चलाना बहुत आसान है। बस सुबह वर्माजी सिखायेंगे। दोपहर को थोड़ी प्रेक्टीस होगी। शाम तक तो ड्राइविंग में परफेक्ट हो जाऊँगा। बस तुंम तैयार रहना। ठीक छह बजे। और हाँ . डिनर भी बाहर ही करेंगे। मेरे स्वर में विश्वास था।

ऐं.. सच्ची जी. हे राम फिर तो मज़े आ जायेंगे। सुनो जी। दोपहर को ब्यूटी पार्लर हो आऊँगी। आखिर। अपनी गाड़ी मैं बैठ के जाना है। अब तो कार वाले हो गये है, स्टैंडर्ड तो मैनटेन करना पड़ेगा ना।" श्रीमती जी के स्वर में उल्लास था और कार मालकिन के लायक ठसक भी।

उसके बाद श्रीमती जी गुनगुनाती हुई घर के काम निपटाने लगीं और हम कल्पना में उन सभी दुश्मनों को निपटाने लगे जो हमें स्कूटर पर देखकर तानों की गोलियाँ बरसाया करते थे। सोचते-सोचते ही हमें नींद आ गयी। उस रात सपने में हमने अपने आपको जब भी देखा, कार की ड्राइविंग सीट पर ही देखा। हर बार हम सपने में गाड़ी चला रहे होते थे और हमारी बगल की सीट पर कभी मिसेज़ शर्मा हमें निहार रही होतीं थीं तो कभी दफ्तर की मिस ब्रिगेंजा।

अलबत्ता श्रीमतीजी भी किसी सपने में नज़र आई हो, ऐसा हमें याद नहीं आया। वैसे भी नये ड्राइवर के साथ शुरू में तो बीवी ना ही रहे तो बेहतर है, वरना एक्सीडेंट के चांस बढ़ जाते हैं। रात भर में हमारी नींद कई बार उचटी। हर बार अच्छे सपनों को रिवाइंड करते हुए हम सो गये।

सुबह आठ बजे हमारे ड्राइविंग कोच वर्माजी आ धमके। हम तो तैयार थे ही। हमने श्रीमती जी से भी कहा कि वह भी हमारे साथ बैठ लें। कुछ देर हम ड्राइविंग सीखेंगे फिर वर्माजी को विदा करके, उन्हें कार में बिठाकर गुल्लू की चाट खिलाकर लायेंगे। हमने क़ाफ़ी इसरार किया पर श्रीमती जी तैयार नहीं हुई। उन्हें हम पर कुछ ज्यादा विश्वास नहीं था। पर हमारे तीनों बच्चों वीनू, विन्नी और मन्नू को हम पर पक्का भरोसा था कि हम घन्टे-दो घन्टे में कार चलाना सीख जायेंगे और इसके बाद वे अपनी कार में बैठकर आईसक्रीम खाने जायेंगे। हमने भी उनसे वादा कर लिया।

अब गाड़ी चलाना सीखने का टाइम आ गया। वर्माजी ने गाड़ी स्टार्ट की। फिर ड्राइविंग सीट पर बैठकर हमें कोचिंग देने लगे। पैरों की तरफ क्लिच है, बीच में ब्रेक और दांयी तरफ एक्सीलेरेटर है। बांये तरफ गीयर है। पहले क्लिच दबाना है। फिर गाड़ी पहले गियर में डालनी है, तब एक्सेलेरेटर देना है दृ धीरे-धीरे।

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

उन्होंने दो-तीन बार ऐसा करके दिखाया। हमसे पूछा कि समझ गये। हमें भी लगा कि यह तो बड़ा आसान है, सब समझ में आ गया। हमने हाँ कर दी। अब उन्होंने हमें ड्राइविंग सीट पर बिठा दिया। हम थोड़ा घबराये, ब्लड प्रेशर थोड़ा बढ़ गया। वर्माजी समझ गये। उन्होंने फिर रिकार्ड बजाया," चिन्ता मत करो। गाड़ी चलाना टू व्हीलर चलाने से आसान है। बस एक्सीलेटर का ध्यान रखना, उसको ज्यादा मत दबाना। स्टेरिंग सभालने में घन्टे भर में परफेक्ट हो जाओगे।

हमें भी उनकी बातों पर विश्वास हो आया। हमने गाड़ी बंद करके फिर से स्टार्ट की। फेफड़ों में हवा के साथ कॉन्फीडेंस भरा। उसके बाद आस-पास का जायजा लिया। आसपास यानी कालोनी की सड़क पर कोई नहीं था। हमारी गाड़ी थी, हम थे, वर्मा जी थे, बच्चे थे और लगभग आठ-दस फीट की दूरी पर एक खंभा था। अब हमें इत्मिनान हो गया। पहली बात तो हम सब समझ गये थे फिर भी कोई गलती हो जाती तो वर्मा जी थे ही। उनके हाथ हैंडब्रेक पर थे। कुछ भी गलत होने की स्थिति में वह हैंडब्रेक ऊपर खींच देते। गाड़ी रुक जाती। मतलब खतरे की संभावना ना के बराबर थी। हमने वर्मा जी की तरफ़ आँखों आँखों में देखा। वर्मा जी आगे बढ़ने का इशारा किया। साथ ही एक बार फिर समझाया -," एक्सीलेरेटर को बहुत हल्के से दबाने पर ध्यान देना। बाकी सब समझ ही गये हो। अब भगवान का नाम लेकर गाड़ी आगे बढ़ाओ। उन्होंने हिम्मत बढ़ाई फिर बच्चों ने भी नारा लगाया-," पापा गाड़ी बढ़ाओ, हम आपके साथ हैं।

अब हिम्मत आई, फिर भी एक्स्ट्रा हिम्मत के लिए हमने हनुमान चालीसा का मन ही मन जाप भी शुरू कर दिया। कान्फीडेन्स लेवल काफी बढ़ गया। अब हमने गाड़ी बंद करके फिर स्टार्ट की। पहले क्लिच दबाई, गीयर डाला, यहाँ तक सब सही था, पर जैसे ही एक्सीलेरेटर पर पैर रखा। गाड़ी तेज़ी से भाग ली। जाकर सामने खड़े खंम्बे से टकराई। हम घबरा गये। इधर वर्माजी चिल्ला रहे थे। एक्सीलेरेटर से पैर हटाओ- ब्रेक दबाओ। हमें घबराहट में कुछ समझ नहीं आ रहा था। जितना वह चिल्लाते, उतना ही हम जोर से एक्सीलेरेटर दबाते। घबराहट में हम जोर-जोर से चिल्लाने लगे- वर्मा बचाओ, हम मर जायेंगे। ऐसा कहकर हमने घबराकर वर्माजी के हाथ पकड़ लिये। अब वर्मा भी शोर मचाने लगे अबे छोड़ो, हाथ तो छोड़ो। पर हम होश में हों तो छोड़े। हमने ना उनके हाथ छोड़े ना एक्सीलेरेटर दबाना छोड़ा। हम जितनी ताकत से चिल्ला रहे थे, उतनी जोर से एक्सेलेरेटर दबा रहे थे। खंभे में एक टक्कर लगी दो- दस बारह पता नहीं टक्कर पे टक्कर लगती रही। पूरी गाड़ी में चिल्ल-पों मची हुई थी। वर्माजी चिल्ला रहे थे, अबे मेरे हाथ छोड़ो, एक्सीलेरेटर से पैर हटाओ, वरना खंभा गिर जायेगा। हम सब मर जायेंगे। उधर बच्चे चिल्ला रहे थे, रो रहे थे। उधर हम धड़-धड़ बजते दिल से बचाओ-बचाओ चीख रहे थे। पर आँखें बंद करके एक्सेलेरेटर पर जोर लगाये जा रहे थे।कार लगातार खंभे पर टक्कर मार रही थी। खंभा हिल रहा था। उधर वर्माजी अपना हाथ छुड़ाने को जोर लगा रहे थे। साथ-साथ हमें गलिया रहे थे पर हम कार से खंभे को उखाड़ने के काम में लगे थे। तभी जोर की आवाज़ हुई और खंभा उखड़कर कार की छत पर गिरा। कार का शीशा चटख गया। छत पिचक गयी। बच्चे, हम, वर्मा जी और बालकनी में खड़ी श्रीमती जी सभी जोरों से चीखे।

इस कोलाहल और खंभे के पतन से फायदा ये हुआ कि हमारे हाथों ने वर्मा के हाथ छोड़ दिये। वर्मा ने जल्दी से हैंड ब्रेक लगाये। गाड़ी रुक गयी। वर्माजी चीखते हुए पहले खुद बाहर निकले, फिर बच्चों को बाहर निकाला, उसके बाद हमसे बाहर निकलने को कहा। पर हमें कुछ सुनाई नहीं दे रहा था, हम तो एक्सीलेरेटर से पिछले जनम की दुश्मनी निकालने पर आमादा थे। हारकर दुबे ने हमें खींचकर बाहर निकाला। बाहर आते ही हम नीचे गिर गये और बेहोश हो गये। कुछ देर बाद मुंह पर पानी के छींटे मारकर हमें होश में लाया गया पर हम गाड़ी की हालत देखकर फिर से बेहोश होते-होते बचे। खंभे ने कार की छत पिचका दी। आगे का शीशा टूट गया था। दरक से पिछला शीशा भी चटख गया। गनीमत थी कि पुरानी गाड़ी थी, सो मजबूत थी। खंभा कार की छत तोड़कर अन्दर नहीं घुसा था, वरना हम सारे हास्पीटल में पड़े होते। हमने कांपते स्वर में ऊपर वाले को धन्यवाद दिया। उसके बाद वर्माजी को गलियाया कि उन्होंने समय पर हैंड ब्रेक लिए होते तो इतना नुक्सान न होता।

वर्माजी ने हमें बहुत समझाया कि हमने उसके हाथ पकड़ लिये थे, वो हैंड ब्रेक कैसे लगाते। पर बात हमने ना तब मानी, ना आज मानी। बाद में हमने हिसाब लगाया कि उस दिन हमने लगभग पांच मिनट गाड़ी चलाई थी और आठ-दस फीट का सफर तय किया था। मन्नू ने बाकी हिसाब लगाकर बताया कि इस 'लम्बे' सफर में हमने खंभे में पूरे **24** बार टक्कर मारी थी। पाँच मिनट की इस ड्राइविंग पर सिर्फ़ **22** हजार रुपये का खर्चा आया था जिसमें **15000** हजार गाड़ी के इलाज में और बाकी के पैसे खंभे के इलाज़ मे लगे।

इस घटना के बाद हम पर कुछ बढ़िया प्रभाव पड़े। पहला हमने मिसेज शर्मा की ओर देखना बंद कर दिया। दूसरे अपनी तो क्या, दूसरों की गाड़ी में भी बैठना बंद कर दिया। गाड़ी में बैठने के नाम पर ही हमारी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ जाती। हमारी गाड़ी शोपीस की तरह घर में खड़ी रहती। आस-पास से गुजरने वाले लोग पहले हमारी गाड़ी देखते,

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

फिर हमें देखते और फिर हंस पड़ते। हमारी ड्राइविंग के बारे में पूरी कालोनी में कहानियाँ फैलने लगी थी। कई मुंहफट लोग तो हमसे ही उन कहानियों की तस्दीक करने आ जाते। हमारे पड़ोसियों ने, हमारे घरवालों ने, रिश्तेदारों ने सबने हमें गाड़ी खड़ी रखने पर जलील किया, हमने जलालत बर्दाश्त की पर गाड़ी चलाना सीखने का नाम नहीं लिया।ऐसे ही तीन-चार साल गुज़र गये।

हम हर छह महीने में मैकेनिक को बुलाकर गाड़ी की सर्विस करा लेते। उसके बाद गाड़ी का फर्श गलने लगा। दो बार फर्श भी बदलवाया। एक बार अनीस मैनेनिक ने हमसे कहा-साब कब तक गाड़ी में पैसे लगाते रहोगे गाड़ी सीख क्यों नहीं लेते ? हमने उन्हें सारी कहानी बताई। वह हंसे। हसने से फुर्सत पाकर उन्होंने सारी गलती वर्मा की निकाली जिसने बिना सिखाये ही हमारे हाथ में गाड़ी का स्टीयरिंग थमा दिया था। हमें उनकी बात पर विश्वास हो गया। अनीस ने ऐसे ही घंटे भर समझाया। नतीजा यह निकला कि हम अनीस से गाड़ी सीखने को तैयार हो गये। तय हुआ कि अनीस पूरे पन्द्रह दिन हमको गाड़ी चलाना सिखायेंगे। बदले में हम उसे १५०० रुपये और एक मिठाई का डिब्बा देंगे। इसके बाद अनीस चले गये।

हमने उनके जाने के बाद श्रीमती जी को अपने फैसले की खबर की। उन्होंने यह सुनकर हमारी ओर बस होठ बिचकाकर एक हिकारत भरी मुस्कान मारी कि हम घायल हो गये। हमने उनकी तारीफ़ में कुछ कसीदे पढ़े और मन में तय कर लिया कि अब तो चाहे जो हो, हम गाड़ी चलाना सीखकर ही दिखायेंगे।

यह निश्चय बहुत देर तक कायम रहा। यूं समझिये कि शाम तक हम अड़े रहे। पर जब हम रात को बिस्तर पर लैटे तो हमारा निर्णय डांवाडोल हो चुका था। रात भर हम सपने देखते रहे। कभी देखते कि कि हमारी कार हवाई जहाज बनकर हवा में तैर रही है, कभी वह एफिल टावर को टक्कर मारकर गिरा रही है तो कभी पीसा की टेढ़ी मीनार सीधी कर रही है। एक बार तो हमने यहाँ तक देख लिया कि हमारी कार ने चीन की दीवार गिरा दी है और चीन ने नाराज़ होकर हमारे देश पर हमले की चेतावनी तक दे दी है। किस्सा कोताह यह है कि हमने रात भर में दर्जनों सपने देख डाले। हर बार नींद टूटने पर हमने यही निर्णय लिया कि हमें दुनिया को बर्बाद होने से बचाना है तो हमें कार सीखने का फैसला बदलना पड़ेगा।

रात भर के सपनों का नतीजा यह हुआ कि सुबह जब अनीस हमें कार सिखाने आये तो उनके आने से पहले हम वर्माजी के घर निकल चुके थे। दूसरे दिन हम शर्मा जी के घर चाय पी रहे थे। तीसरे दिन हम रावतजी को मेहमान नवाजी का लुत्फ़ दिला रहे थे। रोज़ अनीस आते, लौट जाते। पर वह भी जिद्दी आदमी थे। उन्होंने हिम्मत नहीं छोड़ी। चौथे दिन, जब हम उनसे बचकर सुबह छह बजे ही निकल रहे थे कि उन्होंने हमें लपक लिया। हम खिसियाए, वह मुस्कराये। हमने आँय -बाँय की, अपने डर का हवाला दिया। दुनिया को बर्बाद होने से बचाने में उनसे मदद की अपील की। पर वह सिर्फ़ मुस्कराते रहे। हम उनकी मुस्कान से बचने के रास्ते ढूंढते रहे। हमने उन्हें भावी नुक्सान से बचाने के लिए **1500/-** रुपये बिना सिखाये ही देने का प्रस्ताव तक कर डाला। पर उन्होंने 'मुफ्त का पैसा हराम है' पर एक प्रवचन दे डाला। हारकर हम ड्राइविंग सीखने को तैयार हो गये। पर हमने दो शर्तें रख दीं कि एक तो हम एक्सीलेरेटर पर पैर नहीं रखेंगे। दूसरे हम कार में हैलमेट लगाकर बैठेगें।आश्चर्य ! उन्होंने हमारी दोनों शर्त मान ली। अब तो हमारी मजबूरी थी, हम घर से हेलमेट लेकर आये। सर पर लगाया और कार में बैठ गये।

अनीस ने खुश होकर कार स्टार्ट की रास्ते भर वह हमें कार के पुर्जों और चलाने की तकनीक के बारे में बताते रहे पर तो हम हनुमान चालीसा के पाठ में जुटे रहे । लोग हमें हैलमेट के कारण घूर-घूर कर देख रहे थे। हंस रहे थे, पर हम निश्चित थे।सीधी बात दूँ जान है तो जहान है। अनीस कार को एक खुले मैदान में ले आये। हमने अच्छी तरह तसल्ली कर ली, दूर-दूर तक कोई खंभा नहीं था। ट्रेनिंग शुरू करने से पहले अनीस ने हिम्मत पर लेक्चर दिया "हिम्मते मरदा, मददे खुदा का नारा दिया। हमारी गैरत वगैरहा को ललकारा।

इन सबसे निपटने के बाद नये सिरे से हमें गीयर, ब्रेक, गियर वगैरहा के बारे में सिखाया। हमने एक-एक बात को दस-दस बार पूछा। इतना पूछा की उन्हें हमारे कूढ़ मगज होने पर पूरा विश्वास हो गया। और कोई होता तो भाग जाता पर हलाल की कमाई ने उन्हें यह मौका नहीं दिया। आखिर हमारी ट्रेनिंग शुरू हुई। कई साल बाद हम ड्राइविंग सीट पर बैठे। दिल धड़-धड़ बज रहा था, हाथ-पाँव कांप रहे थे, कांपती जुबान पर हनुमान चालीसा लहक रहा था। इसी अवस्था में हमने अनीस के कहे अनुसार लगभग घंटे भर तक पहला गियर डालने और फिर उसे न्यूट्रल में लाने की प्रैक्टिस की। अगले घन्टे में हमने क्लिच दबाने की प्रेक्टिस की। हाँ और भूलकर भी हमने एक्सीलेरेटर की तरफ नहीं देखा, वरना शायद हमारी घिग्घी ही बंध जाती। इसी बीच गाड़ी जो है, वो बंद रही।

ये सारी प्रेक्टिस बंद गाड़ी में चलती रही। उसके बाद हम थक गये। अनीस ने गाड़ी घर की ओर मोड़ ली। हमारा ख्याल था कि हमारी कूढ़मगजी देखकर अनीस अगले दिन नहीं आयेगें। पर वह फिर आ गये। अगले दिन से वही मशक्कत शुरू हुई। उपलब्धि यह रही कि हमने बिना एक्सीलेरेटर पर पैर रखे पूरे बीस फीट गाड़ी चलाई। वो भी फर्स्ट गेयर डालकर, क्लिच

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

के सहारे। अगले दिन बीस से तीस फीट फिर अगले दिन से फी दस फीट गाड़ी बढ़ती रही। आठ दिन बाद हमारी यह हालत हो गयी कि हमने लगभग क्लिच पर ही आधा किलोमीटर गाड़ी चला दी। नौवें दिन प्रैक्टिस बंद रही क्योंकि क्लिच प्लेट फुंक गयी थी। उसके ठीक होने में सिर्फ़ सात हजार रुपये और दो दिन लगे. इस अवधि में हमें नींद अच्छी आई और बुरे सपने भी नहीं आये।

उसके बाद गाड़ी फिर चल गयी। एक महीने तक हमने गाड़ी चलानी सीखी। दो बार और क्लिच प्लेट बदलवाई। पर हमारा उत्साह कम नहीं हुआ। हमारी हिम्मत यहां तक बढ़ गयी कि कई बार हम अनीस के ना होने पर भी गाड़ी निकालने लगे और क्लिच के सहारे कालोनी की सड़कों पर चलाने लगे। पर यह सावधानी जरूर बरतते ये कि किसी भी वाहन को दूर से देखकर जोर-जोर से हार्न बजाना शुरू कर देते। वह तब भी पास आता तो वहीं ब्रेक लगाकर गाड़ी खड़ी कर देते। इस चक्कर में हमने शायद सभी गाड़ी वालों से जाने कितनी गालियां खाई होंगी पर हमारी हिम्मत नहीं टूटी। आखिर हम गाड़ी चलाने का सपना जो पूरा कर रहे थे।

ढाई-तीन महीनों की क्लच ड्राइविंग के बाद हमारा हौंसला बढ़ गया। हमने एक दिन अनीस के सामने प्रस्ताव रख दिया कि वह हमें पूरी ड्राइविंग सिखाये, बाकायदा एक्सीलेरेटर के उपयोग वाली। शायद तब तक अनीस के सब्र का प्याला भी छलकने की आखिरी स्टेज पर था। उस इस प्रस्ताव से राहत मिली। हमने धड़कते दिल और कांपते पैरों से एक्सीलेरेटर का उपयोग शुरू किया। वही हुआ जिसका डर था, एक्सीलेरेटर पर पैर रखते ही गाड़ी भाग ली। अनीस चौकन्ना थे, उन्होंने हैंड ब्रेक लिया। हमारा सीना स्टीयरिंग से टकराया। पर हमने हिम्मत नहीं हारी। सीना मलकर हम फिर ड्राइविंग में जुट गये। पन्द्रह-बीस दिन में हालात इतने बढ़िया हो गये कि हम फर्स्ट से सेकेंड गीयर तक पहुँच गये। लगभग बीस किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से अपनी गाड़ी दौड़ने लगी। एक दिन वापसी में हमने अनीस से कहा कि वह चाहे तो वापस चले जायें, आज हम गाड़ी खुद कालोनी में लेकर जायेंगे।

अनीस ने हमें खूब समझाया पर हम नहीं माने। हारकर वह चले गये।हमने पूरे आत्मविश्वास से गाड़ी आगे बढ़ाई। खाली रास्ते में तो सब ठीक था। कालोनी के पास की सड़क पर थोड़ी धुकधुकी बढ़ी। जितनी धुकधुकी बढी, उतनी ही हमारी हार्न पर निर्भरता बढ़ी। दो-चार जगह गाड़ी बंद भी करनी पड़ी। पर फिर हनुमान जी का नाम लेकर गाड़ी आगे बढ़ा दी। गाड़ी कालोनी के गेट में घुस गयी। भीड़-भाड़ कम थी। वैसे भी अधिकांश लोग हमें और हमारी गाड़ी को पहचानते थे। कुछ लोगों ने हमारी गाड़ी देखते ही आपनी गाड़ी कोने में खड़ी कर दी। जल्दी वाले बच बचाकर निकालकर ले गये। सब कुछ बड़े सहज ढंग से चल रहा था। हमने सपनों की बुनाई भी शुरू कर दी थी कि सब ऐसे ही चलता रहा तो दो-चार दिन में हम श्रीमती जी को लाँग ड्राइव पर ले जाने लायक हो जायेंगे।

हमने यह सोचा ही था कि डैश बोर्ड पर लगा मोबाइल बज उठा। देखा तो श्रीमती जी का ही फोन था। हमने फोन उठा लिया। अभी हम उन्हें अकेले गाड़ी लाने की बात कहने ही वाले थे कि गली के मोड़ से एक ट्रक आता दिखाई दिया जिस पर सामान लदा था। उसे देखकर हमने बांये तरफ मोड़ने की कोशिश की, उधर से एक मोटर साइकिल आ रही थी। एक तरफ मोबाइल पर बात, दूसरी तरफ ट्रक और तीसरी तरफ से मोटर साइकिल। इन तीनों ने हमारे संतुलन का बैंड बजा दिया। हमने खूब जोर से हार्न बजाया, खूब बचके निकलने की कोशिश की, निकल भी जाते पर मोटर साइकिल वाला बिल्कुल हमारी गाड़ी के सामने से निकाल ले गया, उसे बचाने की कोशिश में हमारे हाथ-पांव फूल गये। हमने स्टीयरिंग व्हील घुमाया, ब्रेक दबाने की कोशिश की। पर ब्रेक की जगह वही एक्सीलेरेटर दब गया। बस फिर क्या था गाड़ी ने ट्रक पर चढ़ाई कर दी। बड़ी जोर से धड़ाम की आवाज़ हुई। हमारा सिर स्टीयरिंग व्हील से टकराया और हम बेहोश हो गये।

उसके बाद जब हमारी बेहोशी टूटी तो हमने देखा कि हम हास्पीटल के बेड पर हैं। हमारे पूरे बदन पर पट्टियाँ बंधी है। सामने डाक्टरों की फौज और उसके पीछे आँखों में आँसू भरे श्रीमती जी खड़ी हैं। हमें होश में आते देख वह फूट दृ फूट कर रोने लगी। हमने उन्हें सान्त्वना देने को, उठने की कोशिश की तो उठ नहीं पाये। दर्द की तेज़ लहर बदन में दौड़ गयी डह्क्टरों ने बताया कि हमारे हाथ और पैरों की हड्ड़ियां कई जगहों से टूटी पड़ी हैं। और हम आज तीन दिन बाद होश में आये हैं। वो तो हमारी किस्मत अच्छी थी कि हम बच गये, वर्ना उम्मीद कम थी। इतना सुनते हम फिर से बेहोश हो गये।

आगे की कहानी सिर्फ़ इतनी है कि हम पूरे सात महीने अस्पताल में इलाज कराते रहे। इलाज़ पर लाखों रुपये का खर्चा आया। कई महीने बिना वेतन के छुट्टियों पर रहे। गाड़ी पूरी चकनाचूर हो गयी। नौकरी भी जाते-जाते बची। पर इस सबके बाद भी हमें बस एक ही बात का संतोष रहा कि हमने बिना किसी की मदद के गाड़ी चलाई थी वो भी पूरे एक किलोमीटर स अब हम सिर उठाकर कह तो सकते हैं कि हमें कार चलानी आती है। इतना कम है क्या ?

सुभाष चंदर

जी 186 ए ,एच आई जी ,

प्रताप विहार ,गाजियाबाद -201009

9311660057

प्रधान संपादक कान्ति शुक्ला की कलम से

छेड दो फिर वीणा के तार ।
हृदय में जगे मधुर झंकार ।
विमोहित है मानस निर्लिप्त
बही अंतस में सरसित धार ।
कल्पना के उग आए पंख
भाव का दिव्य सजा संसार ।
गीत स्वर-डोली पर सज गए
नैन के स्वप्न हुए साकार ।
आज है फिर स्पंदित अनुराग
प्रतीक्षक एक प्रणय-गुंजार ।
कौन भ्रमरी का नवल सुहाग
पुष्प से मिल करता अभिसार ।
तृषित तृष्णा जो बैठी मौन
लगी लेने उज्ज्वल आकार ।
चेतना लो , हो गई निःशब्द
धैर्य से लेने को प्रतिकार ।
कान्ति शुक्ला यहां

बन अपराजित दीप नेह- बाती काढ़ आंकार लिखें ।
आशा और विश्वास संजोए, मृदु मन के श्रृंगार लिखें ।
सृजन-साधना में सुंदरतम, भावों का आलोक लिए
जग की सकल वेदना लेकर, कविता के अधिकार लिखें ।
स्वप्नों के अवगुंठन उठना, है दुष्कर सा कार्य यहाँ
पर यथार्थ की ठोस धरा पर, जीने का अधिकार लिखें ।
जीवन कठिन परीक्षा जिसमें, आधि-व्याधि सुख-दुख आते
कष्टों के इस दुर्गम पथ पर, कैसा भय संचार लिखें ।
सरस मधुर स्वर की डोली पर, लय की वधू विराजित कर
द्रवित प्राण से विधा गीतिका, की अमृत सम धार लिखें ।
कान्ति शुक्ला

चराग़ है कि है अगन ।
जला दिया खिला चमन ।
नियति है क्रूरतम गहन ।
नहीं चला कहीं जतन ।
लो चित्र बना मृदु सुमन।
हुए दफ़न सभी सपन ।

सादगी में जमाल था, क्या था ।
यह जवाबी सवाल था, क्या था ।
लोग आला नज़ीर बन बैठे
इल्म जिनका कमाल था, क्या था ।
बात करने लगे निगाहों से
बोलने में बवाल था, क्या था ।
सूरते-हाल बेवशी देखी
बाद मुद्दत हवाल था, क्या था।
था हक़ीक़ी मिजाज़ पाने को
इश्क़ वह ला-ज़वाल था, क्या था ।
रोज मरने लगे हजारों क्यों
क्या दवा का अकाल था, क्या था।
नाज़ करता रहा खुदी पर जो
आप अपनी मिसाल था, क्या था।
कान्ति शुक्ला

तेजपुंज आदि शक्ति राष्ट्र-शान बेटियां ।
मातृ रूप सुख अनूप गेह-मान बेटियां ।
क्षोभ क्यों करे अगर मिली सुता जिसे यहाँ
गर्व से कहे कि गोद- स्वाभिमान बेटियां।
शारदा सुरूप दिव्य ज्योति है कुमारिका
जो करो सुनेह तो उदार जान बेटियां ।
हो रह सबल सफल सुज्ञान प्रेरिका प्रबल
सिंह सी गरज रह सुशौर्यवान बेटियां ।
पूजता जिसे जगत वही अपार शक्ति हैं
भेद भाव क्यों करो कि सुत समान बेटियां ।

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

चरखारीवाली काकी

कुछ देर पहले ही नई नवेली दुल्हन का गृह प्रवेश हुआ था और मुँह दिखाई तथा कुछ दूसरी रस्मों की तैयारियाँ हो रहीं थी । अम्मा कुर्सी पर बैठी तैयारियों को देख रहीं थी और कई बार चरखारीवाली काकी को याद कर चुकी थीं – "अभी तक चरखारीवाली नहीं आई .. कहती थी आप तनकई चिंता न करो मैं सब संभाल लूँगी ।" तभी बाहर किसी की आवाज सुनाई दी .. "चरखारीवाली नहीं रही" .. अम्मा ने सुना तो पूजा की थाली उनके हाथों से गिरते-गिरते बची । मुझे तो जैसे साँप ही सूँघ गया । मैं दुल्हन के पास बैठा हुआ था ।तुलसी बुआ ने मुझे दुल्हन के पास ही बैठे रहने का इशारा करते हुए कहा था-"बबुआ, अभी कहीं नहीं जाना है .. कुछ नैंग दोनों को साथ में करना है ।"उसी समय मनोरमा मामी और शीला मौसी को तेजी से कमरे से बाहर जाते देखा ।

मुझे एक-एक क्षण काटना भारी हो रहा था । मन पर काबू कर पाना मुश्किल हो रहा था ।बगल में ब्याह कर लाई गई जीवन संगिनी बैठी थी और दूसरी तरफ अपने बच्चे सरीखा स्नेह देने वाली काकी के निधन की अविश्वसनीय खबर विह्वल कर रही थी । कर्तव्य की तराजू के दोनों पलड़े बराबरी पर आकर रुक गए थे, कोई भी पलड़ा ऊपर नीचे नहीं हो रहा था । मैं वहाँ बैठा जरूर था लेकिन चरखारीवाली काकी का सौम्य और ममतामयी चेहरा बार-बार आँखों के सामने आकर स्थिर हो जाता था । कल जब बरात लेके घर से निकले थे तब तक तो काकी अच्छी भली थीं । शादी में कितना दौड़-दौड़ कर काम कर रहीं थीं, सारी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले रखी थी । शादी से बीस दिन पहले अम्मा बाथरूम में गिर पड़ी थीं । कमर में अंदरूनी चोट आई थी । डॉक्टर ने कमर में पट्टा पहिनने और पूरा आराम करने की सलाह दी थी । अम्मा को उनके पलंग से उठने ही नहीं दिया था । कहती थीं -"जब तलक मैं हूँ कोनऊ काम की चिंता करबे की जरूरत नाईं है जीजी .. आप तो बैठे-बैठे हुकुम देओ, सारो काम हो जैहे एकदम फस्ट कलास . डाग्डर ने आपको आराम करबे को कहो है सो पूरो आराम करो ।'

"अरी चरखारीवाली, बहू आवेगी तो का कहेगी .बीमारू सास पल्ले से बाँध दई .. हम पलंग पे बैठे रहबी तो और बीमार पड़ जैबी" – अम्मा ने एक बार कहते हुए पलंग से उठने की कोशिश की थी पर चरखारीवाली ने एक नहीं सुनी थी और साधिकार कहा था – "जीजी, आप पलंग पे बैठे-बैठे नजर रखो बस . . काम में कौनऊ गड़बड़ी लगे तो टोक दइयो, पर उठबे की बिल्कुल न सोचियो .. अपनी चरखारीवाली पे भरोसो नईं रह गओ का .. बीमारी की हालत में आपको काम करने पड़े तो धिक्कार है हमें"।

इसके बाद तो चरखारीवाली काकी को फुरसत से दो पल भी बैठे नहीं देखा द्य शादी के लिए आम और आँवले का आचार डालने से लेकर उड़द, मूँग और साबूदाने के पापड़ भी उनने अकेले ही बनाए थे द्य आटा, दाल, चावल, शक्कर, मसाले आदि को भी करीने से डिब्बों में भरकर जमाया था । इस सब के बीच समय निकाल कर वह अम्मा की कमर में दवा भी लगा देतीं । पता नहीं कहाँ से आती थी इतनी ऊर्जा उनमें ।

वैसे तो चरखारीवाली काकी से हमारा कोई सीधा रिश्ता नहीं था पर अपनों से ज्यादा अपनापा था अम्मा और उनमें । उनका नाम क्या था, मुझे नहीं पता .. कभी जानने की जरूरत भी नहीं महसूस हुई थी । जिसके मुँह से भी सुना उनको चरखारीवाली कहते ही सुना । सारे मोहल्ले के लोग उनको इसी नाम से पुकारते थे । बड़े लोग केवल चरखारीवाली कहते तो बच्चे चरखारीवाली चाची या काकी कहकर बुलाते । कुछ हम उम्र लोग चरखारीवाली भौजी कहकर सम्बोधित करते । यही पहिचान थी उनकी । इसमें अटपटा कुछ नहीं था ।

हमारे सिंहपुर में ब्याह कर आई अधिकांश महिलाओं के ऐसे ही नाम थे, पनागरवाली, बक्स्वाहावाली, मड़लावाली, ककरहटीवाली, गुनौरवाली, सटईवाली .. । शादी के बाद हमारे गाँव में महिलाओं के ऐसे ही नाम हो जाते थे और उनके वास्तविक नाम वाली पहिचान गाँव की सीमा के भीतर कदम रखते ही छूट जाती थी । बस अम्मा को कोई उनके गाँव के नाम से नहीं पुकारता था शायद इसके पीछे अम्मा के गाँव का

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

नाम छोटी-लौड़ी होना था, जिसका उच्चारण अधिकांश लोग छोटी-लोंडी करते थे । शुरु में मैं सोचता था कि अम्मा को कोई छोटी लौड़ीवाली कहकर क्यों नहीं बुलाता पर जैसे-जैसे बड़ा हुआ कारण स्वयं ही समझ में आ गया ।

अम्मा के विवाह के तीन माह उपरांत ही चरखारीवाली काकी ब्याह कर सिंहपुर आई थी । बला की सुंदर लेकिन बहुत अभागी थी काकी । उनके भाग्य में पति का सुख लिखा ही नहीं था । शादी के चौथे दिन ही पन्ना-घाटी में मोटरसाइकिल के स्लिप हो जाने से पति-परमेश्वर नहीं रहे । लोगों ने काकी को बहुत बुरा भला कहा । कुछ ने तो डायन तक की संज्ञा दे डाली थी पर अनपढ़ सास अपेक्षा के विपरीत उनके साथ मजबूती से खड़ी नजर आईं । लोगों से कहा - "ईमें ऊ बेचारी को का दोष, ऊकी तो सारी दुनिया, सारो सुख चैन चलो गओ । सारो कसूर तो सुखपाल को है .. लाख बार मना करो हतो कि दारू पीके मोटर साइकिल मती चलाया कर .. पर ऊने कबहुँ न सुनी .. सो, जो तो एक दिन होनई था, सो हो गओ ।वो तो चलो गओ और चारई दिन में बहू की मांग सूनी कर गओ ।"

खुशियों पर असमय लगे ग्रहण को काकी ने भाग्य का लिखा मान के संतोष कर लिया । उन्होंने सास के साथ ही सिंहपुर को भी पूरे अपनेपन से अपना लिया । अम्मा बताती हैं कि दामाद की मौत के बाद बाऊ जी चरखारीवाली को साथ ले जाने के लिए भी आए थे लेकिन सास का मुँह देखकर जाने से मना कर दिया था ।हमारे घर से दो घर छोड़कर ही उनका घर था । अम्मा को उनसे विशेष लगाव हो गया था, शायद अम्मा उनके इस तरह विधवा हो जाने से व्यथित थीं और उनको अपनापन देकर उनका दुख कम करना चाहती थीं । पर काकी ने कभी समय की मार के आगे घुटने नहीं टेके । उन्होंने जिंदगी को बोझ नहीं माना, उसे ढोया नहीं बल्कि उसे जीती रहीं बड़ी शिद्दत से, हौसले से और असीम संतोष भाव से । बड़े से बड़ा दुख उनके आँगन में पैर पसार कर नहीं बैठ पाया द्य वह दूसरों की खुशियों में अपनी खुशी तलाश कर जिंदगी में रंगों की कमी को पूरा करती रहीं द्य सारे मोहल्ले में किसी के यहाँ कोई औसर हो, उनकी उपस्थिति अनिवार्य होती चली गई, वह आगे-आगे रहतीं और निःस्वार्थ भाव से काम करतीं द्य

उनको मुझसे विशेष स्नेह था द्य अम्मा बताती हैं मेरा जन्म ऑपरेशन से हुआ था द्य घर में कोई नहीं था जो अम्मा की देखभाल कर सकता । तुलसी बुआ को बुलावा भेजा था किंतु वह नहीं आ सकी थी । ऐसे कठिन समय में काकी पाँच दिनों तक न केवल अम्मा के साथ अस्पताल में रहीं थी अपितु घर आने के बाद भी उनकी सेवा-सुश्रूषा करती रहीं थी । मुझे पालने में भी उनका बहुत योगदान था । मेरी लोई-मालिश तो शायद ही अम्मा ने कभी की होगी । यह काम काकी के ही जिम्मे था । मैं बड़ा हुआ तो काकी अक्सर अपने घर ले आती । मैं नखरे करता और वह खुशी-खुशी मेरे सारे नखरे सहन करती और खुश होती । उनके साथ समय बिताना मुझे भी अच्छा लगता । वह तरह-तरह के व्यंजन बनाकर अपने हाथों से खिलाती और मेरे साथ बच्चा बनकर खूब धमाल मचातीं ।

आठवीं तक की पढ़ाई मैंने सिंहपुर में ही रहकर की । बाद की पढ़ाई के लिए मुझे पन्ना जाना पड़ा । वहाँ होस्टल की सुविधा तो थी नहीं अतएव छत्रसाल कालोनी में एक कमरा लेकर रहता । खाने के लिए बिंदिया टिफिन सेंटर से टिफिन आता । कई बार इतना बेस्वाद खाना मिलता कि पहला कौर मुँह में रखते ही खाने की इच्छा मर जाती । बस स्टैंड जाकर समोसे खाकर आ जाता द्य बीच-बीच में अम्मा देखने आती रहतीं । साथ में नाश्ता बनाकर ले आतीं । काकी भी हर बार मेरी पसंद के बेसन के लड्डू और बरफी बना कर उनके साथ भेजतीं । जब तक अम्मा रहतीं अपनी मौज रहती । दोनों टाइम मनपसंद खाने को मिलता ।

मैं जब इंजीनियरिंग करने इंदौर जा रहा था तो काकी, अम्मा से ज्यादा दुखी नजर आ रही थी । मैं थर्ड ईयर में था जब काकी की सास गुजर गईं और काकी नितांत अकेली हो गई ।मुझे इंजीनियरिंग करते ही गुड़गांव की एक एम.एन.सी. में जांब मिल गया । दो साल पहले जब मैं अचानक बीमार पड़ गया था तो

अम्मा और काकी कुछ दिन मेरे साथ गुड़गांव में रही थीं । बाबू जी चुनाव में ड्यूटी के चलते मुझे देखने भी नहीं आ सके थे । अम्मा के जाने के बाद काकी मेरा ख्याल रखने के लिए रुक गई थीं । अम्मा बाबू जी को ज्यादा समय के लिए अकेला नहीं छोड़ सकती थी । सुगर और ब्लड प्रेशर के मरीज जो थे । जब तक काकी साथ में रहीं मेरी भूख बढ़ गई और तीन किलो वजन भी .. पचपन किलो से सीधा अट्ठावन का हो गया । मेरी शादी को लेकर बहुत उत्साहित थीं काकी । सगाई के बाद एक बार उनने मुझसे कहा था – “रागिनी से बात होवत है तेरी”

मैं संकोचवश उत्तर नहीं दे सका था तो उनने ही कहा था – “बात किया कर उससे .. एक दूसरे को अच्छी तरह से जानवे के लाने जरूरी है बातें करना .. तेरे पास नम्बर नहीं है तो मैं देती हूँ तेरे को” उनकी बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ था कि रागिनी का नम्बर उनके पास है । बाद में पता चला कि रागिनी के छोटे भाई से, जो सगाई में सिंहपुर आया था, नम्बर लिया था उनने ।

काकी की बात सुनकर मन उनके प्रति स्नेह और आदर का भाव दोगुना हो गया ।इस पिछड़े और दकियानूसी गाँव में लगभग अनपढ़ काकी की सोच इतनी प्रगतिवादी हो सकती है, एकाएक विश्वास नहीं हुआ था द्य बहुत देर तक उनके चेहरे को देखते हुए अनुमान लगाने का प्रयास करता रहा था । गाँव की पढ़ी-लिखी औरतों को देखता हूँ तो उनकी दकियानूसी सोच के कितने ही किस्से आँखों में तैरने लगते हैं । ज्यादा दूर क्यों जाएँ .. कल ही की तो बात है । बरात की निकासी के लिए मैं दूल्हे के वेश में दरवाजे पर खड़ा हुआ था द्य अम्मा ने मुझे तिलक लगा के थाली काकी की ओर बढ़ाई ही थी कि मनोरमा मामी की आवाज सुनाई दी थी – ”लल्ली, अंधेर मत करो .. विधवा से तिलक करा कर अपशगुन को न्योता क्यों दे रही हो” “मीरा जीजी, आप तो समझदार हो .. मन्नो भौजी सही कह रही हैं ” – यह शीला मौसी की आवाज थी ।

काकी बिना तिलक किए साड़ी से आँखें पोंछती हुई तेजी से सामने से हट गईं । मुझे मनोरमा मामी और शीला मौसी पर गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन समय की नजाकत समझते हुए चुप रहा आया ।

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

रागिनी के बगल में बैठा-बैठा मैं बहुत असहाय महसूस कर रहा था । ”चरखारीवाली नहीं रही” की सूचना अम्मा के लिए भी किसी सदमे से कम नहीं थी । वह अजीब उलझन में फँसी प्रतीत हो रहीं थी .. नई बहू के आगमन की खुशियाँ मनाएँ या काकी के असामयिक निधन का मातम । वह शांत दिखने की कोशिश जरूर कर रहीं थी लेकिन उनकी आँखों की कोरों से झाँक रहे अश्रुकण उनकी इस जबरिया कोशिश की चुगली कर रहे थे । मेरे भीतर का ज्वार भी थमने का नाम नहीं ले रहा था । मैंने ही मन को कड़ा कर अम्मा से कहा – “काकी को लेकर मन बहुत व्यथित है .. क्या हम आज की रस्में कल नहीं कर सकते ?”

अम्मा ने एक नजर रागिनी पर डाली, रागिनी बोली तो कुछ नहीं लेकिन नजरों में ही अम्मा से न जाने क्या कह दिया कि अम्मा ने घोषणा कर दी – ”अब शेष रस्में परसों होंगी”

मैंने रागिनी से स्वारी बोला और उठ खड़ा हुआ । काकी के पड़ोस में रहने वाले रामनिहोर काका और तीन-चार लोग बाहर ही चबूतरे पर बैठे थे । मुझे देखते ही बोले – ”बिटुआ, तुमको अभी यहाँ नहीं आना था .. तुम अभी-अभी दुल्हन को लेके आए हो . . तुम्हें उसके पास होना चाहिए ।

“पर ये हुआ कैसे” – मैने काका की बात को अनसुना करते हुए पूछा।

”हरि इच्छा बिटुआ .. तुम्हारी शादी को लेकर बहुत खुश थी .. शायद खुशी सहन नहीं हो सकी .. पूजा करते-करते उसी स्थिति में प्राण त्याग दिए द्य”

पवई वाली काकी ने कहा – “चरखारीवाली अभागन जरूर थी लेकिन थी बहुत पुण्यात्मा .. ऐसी मौत भागवालों को ही मिले है .. बिटुआ तुमारी बरात जावे के बाद से ही कमरे में बंद थी .. बार-बार यही कहे जा रही थी .. हम अभागे हैं पर हम अपुन के दुर्भाग की छाया हमार बिटुआ पे न पड़न देवी .. जैसई बरात आवे की खबर उन्हें लगी वैसी ही उनने प्रान त्याग दए .. मैं तो इतईं बैठी हती जब कमरे से उनकी आवाज आवो बंद हो गई हती”।

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

पवई वाली काकी की बात सुनकर मनोरमा मामी और शीला मौसी के चेहरे सामने आ गए। मुझे विश्वास हो गया कि उनकी जली-कटी बातों से व्यथित होकर ही काकी ने खुद को कमरे में बंद कर लिया होगा द्य मैं काँपते पैरों से काकी के कमरे में घुसा .. उन्हें देखते ही पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई और रुलाई छूट गई ।वह लाल सिल्क की साड़ी पहिने दीवार के सहारे हाथ जोड़कर बैठी थीं । सामने भोलेनाथ की मूर्ति और पूजा का सामान रखा था।

दिल में एक हूक सी उठी और मेरी आँखों से आँसुओं की जलधारा बह निकली द्य आँसुओं पर कोई नियंत्रण नहीं रह गया था अब .. वह बहे जा रहे थे जैसे किसी बराज का गेट खुल गया हो । आँसुओं के बीच ही मेरी आँखों के सामने वह चित्र साकार हो गया जब मैं सगाई के बाद वापस गुडगांव जा रहा था और काकी से मिलने गया था। मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए बोली थीं - "तेरी शादी के बाद जे सफेद धोती फिर कभी न पहिनबी .. तू जो साड़ी लाकर देगा वोई पहिन के लाडो का मोंचायना कर हों।"

बहू का मोंचायना .. उनके ये शब्द मेरे कानों में हथोड़े जैसा आघात कर रहे थे । मुझे पता ही नहीं चला कि कब अम्मा मेरे पीछे आकर खड़ी हो गईं । कंधे पर उनके हाथ के स्पर्श से ही मैं उनकी उपस्थिति को जान सका । मुड़कर देखा तो रागिनी उनको सहारा देते हुए उनके साथ खड़ी थी । माँ के इशारे पर जैसे ही मैं और रागिनी काकी के पैर छूने झुके, काकी के हाथ में दबे फूल की पत्तियाँ रागिनी के सिर पर आ गिरीं । दरवाजे के बाहर खड़ी मनोरमा मामी और शीला मौसी दहाड़ मार कर रो पड़ीं द्य

अरुण अर्णव खरे
डी-1/35 दानिश नगर
होशंगाबाद रोड, भोपाल
पिन: 462026
मोबा : 9893007744

फरिश्ता नहीं

मैं भी इंसान हूँ,
फरिश्ता नहीं ,
मुझे भी दर्द होता है।
बस हँस कर छिपा लेती हूँ।
किसको पड़ी है
कोई देखे, पूछे,दवा लगाये।
खुद ही अपने जख्मों को सी
देती हूँ।
एक पैबंद पर नया पैबंद लगाते हुए
बीत गए दिन महीने और साल
कुछ भी तो नहीं बदला
न दर्द देने वाले बदले
और न सहने वाली
बदली हैं तो सिर्फ तारीखें
हर दशक के बाद
एक नया दर्द का सिलसिला
ना साथी है ना मंजिल का पता
इन सकरीली,पथरीली
टेढ़ी मेढ़ी राहों पर
चलते जाना है,
बस चलते जाना।

लता यादव गुड़गांव

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

बसंत

सुधा बसोर, गाजियाबाद

धीरे-धीरे सरका धुंध की चादर धरती भी अब झांक रही है।
पिया मिलन की आस संजोए अंबर का मुंह ताक रही है।।
कर सोलह श्रृंगार धरा खुद पर ही इतराई है।
झेली विरह की पीड़ा जो अब तक देख वसंत सब बिसराई है।।
भांति भांति के गजरे लेकर केशों का श्रृंगार किया।
पुष्प कमल की लाली से फिर अंधरों को रंग लाल दिया।।
रंग बिरंगे बूटों वाली ओढ़ी चूनर धानी है।
लता वल्लरी कटि कर्धनी, कंगन गेंदा पहने लगे धरा महारानी है।।
देख धरा के इस यौवन को कामदेव भी ललचाते हैं।
निर्निमेष है अंबर भी कब से मिलने धरती से अकुलाते है।।
होगा ये मधुमास सखी री मोहे तो पतझड़ ही भाए।
आकर वसंत निगोड़ा बस मेरी तो विरह की पीर बढ़ाए।।
सृष्टि के कण-कण में देखो झूमे नाचें सब ही गाएं।
पिय बिन कैसे कहूं सखी री आओ हम वासंती हो गाएं।।

नारी हूँ मैं

सृष्टि की सुंदर रचना हूँ ,
कोई प्रवंचना नहीं नारी हूँ ।
लक्ष्मी-दुर्गा सज्जनों के लिए,
दुष्टों हेतु दहकती चिंगारी हूँ ।
सुंदर, कोमल काया की धनी,
सद्गुणों के मिश्रण से हूँ बनी ।
चूड़ी और पायल की खनक,
है व्यक्तित्व में एक चमक ।
मैं कोई दया की पात्र नहीं ,
सजावटी वस्तु मात्र नहीं ।
अटल हौसलों से भरी हूँ ,
आगे बढ़ने से कब डरी हूँ?
मेरे जन्म पर जो होते दुखी,
ऐसे कबुद्धि वालों को क्या कहूँ?
अपने अंश को जो वंश न समझे,
उसको भी मैं अपना ही समझूँ।
आँचल-सी कभी लहराती हूँ,
फूलों-सी मैं मुस्कुराती हूँ ।
अपनी वाणी के जादू से ,
मुश्किलों में धीरज बँधाती हूँ ।
भावनाओं में बह जाती हूँ,
पर सीमा में ही रहती हूँ ।
ज़िंदगी की धूप-छांव में ,
अपना हर फ़र्ज़ निभाती हूँ ।
बाहर से हूँ कोमल भले,
पर आँधियों से टकराती हूँ ।
चार-दिवारी में कैद बेचारी नह
मैं उड़ने की अधिकारी हूँ ।
जीवन के आदर्शों पर चलकर,
काँटों में राह बनाती हूँ ।

सीमा रानी मिश्रा, हिसार, हरियाणा

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

अन्नपूर्णा

मुश्किल से दो माह की छुट्टी मिली है इस भाग-दौड़ और नौकरी से पूरे चार साल में ।अब तो बस भैया के घर चला जाए । बचपन की पुरानी यादें कुछ पुराने मित्र और सहेलियों से मिल कर जो आनंद होता है ना! उतना तो तमाम धन दौलत के मिलने पर भी नहीं होता सो ट्रेन पकड़ी और पहुँच गई भाई के घर।

लेकिन ये क्या? भाई ने तो दो साल पहले ही पुराने घर को छोड़कर दूसरी जगह प्लाट ले कर नया घर बनवा लिया है। पुराने घर वो सहेलियाँ सब यादें वो गलियां सब छूट गईं... खैर चलो ! सफर की थकान से रात बातें करते करते भैया के कमरे में ही आंख लग गई।

रात नींद बहुत ही अच्छी आई।सुबह आंखें खुली तो आठ बज चुके थे भाभी ने ठिठोली की "चौबीस घंटे के सफर की थकान भाई के कमरे में उतरी की नहीं"? मै हंस कर बाहर आ गई। बाहर आकर अच्छी हवा चल रही थी सो वही खड़े हो कर बाहर का नजारा देखने लगी। नई बस्ती होने के कारण कुछ मकानों का निर्माण कार्य का कार्य चल रहा था। तभी वहाँ मैंने देखा एक महिला को करीब चार साल के अपने बच्चे को आते देखा। वह एक फटी सी साड़ी बिछा कर बच्चे को बिठाया और कुछ टूटे खिलौने माचिस की खाली डिब्बी देकर स्वयं उन मजदूरों के साथ काम पर जुट गई।

सुबह से दोपहर फिर शाम..... अब तो मेरा रोज का काम हो गया उसे आश्चर्य और अव्वाक् हो कर देखना, कारण कि वह महिला पूर्णतः गर्भवती थी शायद आठवां महिना चल रहा था ।

मेरी आंखों के सामने सारी मैगज़ीन वो सारी किताबें, ब्रेकिग न्यूज़ फीके से लगने लगे जिनमें कि अनेकों सेलिब्रिटीज तमाम बड़े लोगों की बातें बड़े-बड़े अक्षरों में लिखी होती है अथवा दिखाई जाती है कि हमें भी उन्हीं की तरह गर्भावस्था में फीट रहना चाहिए। उनकी खूबसूरती में चार, आठ नहीं बल्कि चौदह चांद लगा दिया जाता है कि "देखिए इस अवस्था में भी वें कितनी खूबसूरत और फिट हैं"। मुझे इस वक्त ये सारी बातें झूठी और बकवास लग रही थी। कारण भी था। उन सब का समस्त आधुनिक सुविधाओं, शक्तिर्वधक दवाओं एवं भरपूर पोषक तत्वों वाले खान-पान जैसी सुविधाओं के बीच रहकर चर्चा में रहना और जो इस समय मेरी नजरों के सामने थी, वह समस्त अभावों विपरीत परिस्थितियों के बावजूद जोखिम भरे कार्य के बावजूद भी एकदम फिट।

मुझे सारी किताबों न्यूज़ और मैगज़ीन के वे सितारे तुच्छ और फीके लग रहे थे इस महिला के सामने। वह रोज आती और मजदूरों के साथ अपने हिस्से का काम पूरा करके अपनी उपस्थिति दर्ज करवाती शाम को मजूरी ले कर बच्चे के साथ चल देती। लेकिन ये क्या ? कुछ दिन से वह मुझे आंखें फाड़-फाड़ कर देखने के बावजूद दिखाई नहीं दी।

इधर भाई ने भी अपने ऑफिस से पंद्रह दिन की छुट्टी लेकर हमे घुमाने का कार्यक्रम बना लिया वहाँ हमने घुमने के साथ-साथ कई मंदिरों में दर्शन और प्रसाद का भी खूब आनंद लिया।

इसी के साथ मेरी छुट्टी की अवधि भी समाप्त होने को आई। वापस तो जाना ही था सो घर आकर अपनी तैयारी शुरू कर दी। जब छत पर से अपने कपड़े उठाने गई तो पुनः मेरी नज़र उसी जगह जा टिकी जहाँ वह मजदूर महिला अपने बच्चे को बिठाया करती थी, मैंने देखा वहाँ उसी जगह वैसी ही एक साड़ी की गुदड़ी में उस बच्चे के साथ एक छोटा शिशु भी धीरे-धीरे अपने हाथ मार रहा था और वह बच्चा वैसे ही माचिस की खाली डिब्बी और टूटे खिलौनों से खेल रहा था।

मैं समझ गई उस महिला की डिलीवरी हो चुकी है।मैंने अपनी तैयारी कर ली । भैया भी

गाड़ी ले आए मुझे स्टेशन तक छोडने के लिए ' गाड़ी शाम साढ़े पांच बजे की थी सो भैया ने मेरा आरक्षण टिकट देते हुए समझाया "ध्यान से जाना और अपना ख्याल रखना "।

मैंने हां में सिर हिला कर जैसे ही गेट से बाहर आ मेरे पैर ठिठक गए...... उस महिला की गोद में नन्हा शिशु माँ के आंचल में स्तनपान कर रहा था और वही माँ अपने दूसरे बच्चे को अपने हाथों रोटी का एक एक कौर खिला रही थी।

ना जाने क्यूँ मेरी आंखें सब कुछ भूल कर इस सुन्दर दुर्लभ दृश्य को अपने मन के अन्दर कैद करने लगा, क्योंकि मैंने माँ से सुना था कि संसार के समस्त प्राणी माँ अन्नपूर्णा के आशीर्वाद से भोजन पाता है। और इस समय जो मेरी आंखें देख रही थी वह साक्षात माँ अन्नपूर्णा से कम न थी जहाँ एक बालक उस माँ के हाथों से तो दूसरा उसके वक्ष के स्तनों से अपनी क्षुधा मिटा रहा था।

मैं गाड़ी में बैठती इससे पहले ना जाने कैसे मेरे दोनों हाथ उस माँ को देखकर जुड गए "गाड़ी में बैठ कर मैंने उस साक्षात माँ अन्नपूर्णा को प्रणाम किया और गाड़ी स्टेशन की ओर चल दी।आज भी वह दृश्य मेरे हृदय पटल पर यूँ ही अंकित है।

संतोष शर्मा " शान "
हाथरस

तेरी बिंदिया रे

प्रेरणा को बचपन से पूजा-पाठ, सजना- सँवरना बहुत पसंद था। एक तरफ पढ़ने में टॉपर तो दूसरी ओर इतनी सुन्दर कि लगता था ईश्वर ने बहुत समय लेकर उसको रचा-गढ़ा था..उसपर जब वो अपने दमकते माथे पर छोटी सी बिंदी लगाती थी तब तो बस एकदम अनुपम रूप निखर आता था उसका.. ग्रेजुएशन होते ही उसके विवाह के लिए रिश्ते आने लगे..और देखते-देखते वो सुप्रसिद्ध भल्ला खानदान की बहू बन गई।

बखूबी अपनी जिम्मेदारियों को निभाते निभाते वो दो प्यारी सी बेटियों की माँ भी बन गई। चारों तरफ उसके रूप की, गुणों की बॉते होती थी..कि सहसा एक दिन उसके माथे पर कुछ खुजली सी शुरू हो गई। लाल निशान चकत्ते धीरे धीरे जख्म सा हो गया। डाक्टर दवा तो देते पर फायदा जरा भी न होता। परिवार सदमें में तब आया जब एक बड़े अस्पताल की रिपोर्ट में स्किन कैंसर निकल आया..मायका.. ससुराल..चारो तरफ हाहाकार मच गया.. रेडियो थेरेपी के कारण चेहरा भयानक हो चुका था, इतनी बुद्धिमान स्त्री..समय की मार को झेलकर एकदम बदल चुकी थी.. धीरे धीरे ही सही, पर इलाज से वो ठीक हो रही थी, परंतु एक शक उसके मन में आ चुका था कि कल होगा भी या नहीं। वो हर वक्त रोती रहती और अपने श्रंगार के सामानों को छू-छू कर देखती, उसके भीतर जीने की इच्छा ही नहीं । रही.. तिल-तिल कर घुटने लगी थी वो..उसको अथाह प्रेम करने वाला जीवनसाथी मिला था, वो भी इस सदमे से धक सा रह गया था..पर कहते हैं ना कि समय कभी एक सा नहीं रहता.. उसके पति ने उसकी सोच को पुनः सकारात्मक करने की सोची.. उसके घर में ही गरीब लोगों के लिए एक दुकान खोल दी गई। जहाँ हर सामान के साथ ही एक बिंदी का पत्ता फ्री में दिया जाता था।सिंदूर के कोई पैसे नहीं लिए जाते थे..इस अनोखे प्रयास से उनकी दुकान में हर समय भीड़ रहती थी.. प्रेरणा की एक छोटी सी राय लोगों की सुंदरता में चार चांद लगा देती थी। धीरे धीरे प्रेरणा स्वस्थ होने लगी थी..उसकी दुकान की चर्चा और उसके व्यवहार की बातें दूर-दूर तक फैल चुकी थी। कहते हैं ना कि जब आपकी सोच उत्तम हो, प्रयास निश्छल एवं सकारात्मक हों तो कायनात भी आपका दुःख दूर करने में लग जाती ह। गरीबों के आर्शीवाद का प्रभाव था या प्रेरणा का भाग्य, उसकी बीमारी ठीक हो चुकी थी। पर उसने अपनी दुकान पूर्ववत चलने दी।

आज पूरे दो वर्ष के इलाज के बाद प्रेरणा शरद पूर्णिमा के पावन दिवस की पूजा करने के लिए तैयार होकर कमरे से निकली तो उसके पति ने भावुक हो कर उसको गले से लगा लिया और कानों में धीरे से कहा.. "बहुत सुंदर लग रही हो प्रेरणा" बहुत दिनों बाद अपने लिए ऐसी बात सुनकर प्रेरणा लाज से लाल हो पड़ी..तभी उसके कानों में आवाज पड़ी..'तेरी बिंदिया रे..' उसने पीछे मुड़कर देखा तो चौंक पड़ी..कि उसकी दुकान का नामकरण हो गया था.. दोनों बेटियाँ बैनर लिए जा रही था। 'तेरी बिदिया रे' और प्रेरणा..दुकान का नाम पढ़कर खुशी से रो पड़ी..

रश्मि लहर लखनऊ
लखनऊ 226002 मो. 9794473806

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

कैसे ध्वस्त हुआ भाजपा का चक्रव्यूह जमानियां विधान सभा चुनाव

वर्ष 2017 में भाजपा लहर और ताड़ीघाट बारा मार्ग की बदहाली ने गाजीपुर जनपद के जमानियां विधान सभा के पूर्व मंत्री एवं सांसद ओमप्रकाश सिंह को बुरी तरह से पराजय का मुख देखने को मजबूर कर दिया। माननीय मंत्री महोदय को तीसरे स्थान से संतुष्ठ होना पड़ा। भारतीय जनता पार्टी के बढ़ते प्रभाव के कारण अब यह मान लिया गया था कि ओपी अब शायद ही विधान सभा में वापसी कर पायें, उन्हें हार के साथ ही अपनी राजनीति पारी को समाप्त करना होगा।

परन्तु 2022 के चुनाव में भाजपा के परचम के बाद भी ओमप्रकाश ने जीत हासिल किया, जो इतना आसान नहीं था। ओम प्रकाश सिंह ने इस लड़ाई को न सिर्फ अच्छे अन्तर से जीता बल्कि उस सम्मान को भी वापस पाया जिसको लेकर कोई भी नेता अपनी विदाई करना चाहेगा। वैसे राजनीत में विदाई की उम्र नहीं। होती केवल अनुमान लगाये जाते हैं।ओम प्रकाश ने अपनी लड़ाई कैसे लड़ी? कैसे जीता? इस पर भी कई अनुमान लगाये जा रहे हैं। मेरे दृष्ट्रिकोण में जो कहानी थी वह सुने मेरी लेखनी की जुबानी।

वर्ष 2017 का चुनाव बीत चुका था। ओमप्रकाश सिंह चुनाव को हार चुके थे। श्रीमती सुनीता सिंह विजयी उम्मीद्वार के रूप में अपने कार्यो को अपनी समझ के अनुसार कर रही थी। केन्द्र की सरकार द्वारा पुलगामा अटैक का बदला, काश्मीर मुद्दा, तीन तलाक, मुफ्त राशन इत्यादि की गुगली फेंक-फेंक कर पूरा माहौल भाजपा मय कर दिया था। राजनीत में केवल मोदी-अमित शाह, मोदी-अमित शाह के चर्चे थे। योगी जी अभी शासन सीख रहे थे। वर्ष 2019 में सी0ए0ए0 और एन आर सी आन्दोलन के दौरान योगी का कड़ा रूख अपनाना और राम मंदिर का फैसला हिंदू के पक्ष में आने के बाद जब उत्तर प्रदेश में दंगे नहीं, हुए तो मोदी के साथ योगी की लहर चल निकली। चारो तरफ योगी-मोदी, योगी-मोदी का गुणगान होने लगा। ऐसे में किसी विरोधी दल के नेता को अपनी शाख बचानी बहुत मुशकिल थी।

चुनाव हारने के बाद भी उनके प्रतिनिधि जो उनके रथ के सारथी थे अभिमन्नु सिंह ऊर्फ मन्नु सिंह जमानियां विधान सभा के हर छोटे-बड़े कार्यक्रम, सुख-दुःख, आन्दोलन, जन समस्या में ओपी का प्रतिनिधि बन कर पहुँचने लगे और अपने मीठी-मीठी बातों से, भाषणो में नेता जी ये कहते हैं, नेता जी वो कहते है, कह कर ओम प्रकाश के कार्यो को याद दिलाते रहें, मीडिया

को पुचकारते, सामने अगर कोई विरोधी ना नाखुश है तो उसका नाम अधिक सम्मान से लेते, मगर सबके बीच वह यह कहना नहीं भूलते कि “नेता जी बाहर हैं और उन्होंनें मुझे समय पर पहुँचने, मदद करने का सख़्त निर्देश दिया है”। यह बाते जनता के बीच ओपी की मौजूदगी कराती रही।

जहां कमियां थी वहां क्षमा याचना करते रहे और कार्यकर्तायों को बांधते रहे। इसका सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि ओम प्रकाश के कार्य और उनका चेहरा जनता भूल नहीं पायी। कुछ लोग अभिमन्नु सिंह के बारे में तरह तरह की बातें करते रहे लेकिन वह भी वो लोग थे जिन्हें ओमप्रकाश के केवल करीब रहना था, उनसे कहीं न कही व्यवसायिक नाता था। मन्नु सिंह का जनता के बीच में रहना स्वार्थ था या सेवा इससे जनता को कोई भी मतलब नहीं था, वह तो बस अपने बीच मन्नु के रूप में मंत्री को ही देखती।

ओपी द्वारा मन्नु सिंह को भाजपा के चक्रव्यूह के भेदन में लगाना एक दम सही साबित हुआ। मन्नु सिंह के भी अपने नेता के भरोसे को पूरी तरह कायम रखने से भाजपा के चक्र व्यूह का एक द्वार आसानी से टूटा। मंत्री को क्षेत्र की जनता दिमाग से हटा नहीं पाई। जिसका लाभ ओपी को 22 हजार से अधिक मतो से विजयी होकर मिला।

ओपी के जीत में एक पक्ष यह भी रहा हकि विधान सभा चुनाव घोषित होने और दावेदारी करने के बाद सोशलमीडिया पर जैसे ओपी के वायरल वीडियो की बाढ़ सी आ गई। भाजपा और सपा में जुवानी जंग भी तेज हो गई। ओपी की जहं सुनीता सिंह के विरूद्ध जुबान फिसली वही बसपा के परवेज इससे अछूते नहीं रहे। ओपी के खिलाफ आये वीडियो को तो सपा के लोगो ने छूआ भी नहीं लेकिन ओपी के द्वारा दिये गये बयानो को भाजपा और बसपा ने अपने स्तर पर सोशलमीडिया पर खूब वायरल किया।

वायरल के इस खेल का नतीजा यह हुआ कि सोशलमीडिया पर भी चारो तरफ ओपी दिखाई देने लगे। भाजपा के कैडरो ने सुनीता सिंह पर दिये गये ओपी के बयानो को गहमर के मान सम्मान से जोड़ कर केवल गहमर को एक करने की कोशिश किया। वह यह भूल गये कि कोई भी गांव या शहर किसी के पक्ष में चाहे कितना भी एक हो जाये 100 प्रतिशत एक नहीं हो सकता । ओपी पहले से ही गहमर में अपने आपको अपने कार्यकर्तायों के बल पर 30 प्रतिशत समर्थन में मान कर चल रहे थे, उनका लक्ष्य इसे बरकरार रखना था, वह काम इनके गहमर के कार्यकर्ता बखूबी कर रहे थे।

जहां एक तरफ भाजपा इन वायरल वीडियो के सहारे ओपी को घेरने की कोशिश कर रही थी वही दूसरी तरफ इन वायरल वीडियो से ओपी के मूल यादव मुसिलम वोट बैंकों का धुव्रीकरण हो रहा था। भापाजा के कार्यकर्ता जमीन पर जाने की जगह वायरल वीडियों पर लगे रहे और हकीकत की जमीन छोड़ बैठे जिससे वोटो का धुव्रीकरण हुआ लेकिन वह वोट बोला नही, जिसका नुकसान भाजपा को हुआ और फायदा ओपी को। इस प्रकार ओपी के वायरल वीडियो भाजपा के चक्रव्यूह के दूसरे फाटक को तोड़ने में सफल हुए।

चक्रव्यूह का तीसरा फाटक

भूखे को वक्त पर सूखी रोटी, डूबते को तिनके का सहारा एवं मौत से लड़ने वाले व्यक्ति को दो सांसे देने वाले व्यक्ति को लेने वाले का जमीर कभी भूल नहीं पाता। कोरोना काल में गाजीपुर रेलवे स्टेशन से बस के द्वारा

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

लोगो को अपने घर पहुँचाना, भूखें को भोजन एवं कोरोना कैंपो का मैनेजमेंट ओपी का जमानियां में अकेला एक समाजिक कदम था, जिसको उनके धुरंघर विरोधी भी नकार नहीं सके। एक तरफ जहां अन्य नेता अपने घरो में दुबके थे वही ओपी अपने एक सहयोगी मन्नु सिंह के साथ सड़को एवं स्टेशनों पर नजर आते रहे। मीडिया कवरेज देने पर मजबूर हुआ। कोराना काल में अपने बद्मिजजी और बेलागम बोली के मसहूर मंत्री एक शांत और व्यवाहारिक रूप में नज़र आये। उनका यह कार्य भाजपा के चक्रव्यूह भेदन में एक ऐसा कदम था जो सीधे आम आदमी के दिल में उतरता गया। और शायद यही कारण भी था कि 32 राउंड की मतगणना में ओपी कही भी पीछे नहीं दिखाई दिये।

ओपी के जीत के इस चक्रव्यूह को लिखने से पहले यह बता देना चाहता हूँ कि यह पैराग्राफ पूरी तरह से लेखक के आत्म विशलेषण पर आधारित है। वर्ष 2017 के चुनाव में ओपी के हार का अन्तर का लगभग 26 हजार था। वर्ष 2022 के चुनाव को जीतने के लिए पहले तो अपने मतो की संख्या में 26 हजार की सीधी बढ़ोत्तरी बराबरी के लिए चाहिए था। चुनावी विशलेषण करने वाले धुरंघर भी इस बात को स्वीकार कर चुके थे कि 32 चरण की मतगणना में 16 चरण तक 15 हजार से ऊपर की बढ़त लेने वाला प्रत्याशी ही जीत का दावा कर सकता है। ऐसे में 2017 के चुनाव से लेकर 2022 के चुनाव तक 42 हजार मत बढ़ाना वह भी जब विरोधी की सुनामी चल रही हो आसान नहीं था। स्वर्ण, कुशवाहा, सहित अन्य जातियां भाजपा के रथ पर सवार थी।

मुस्लिम और हरिजन मतदाता बसपा की हाथी पर सवार थे। सपा के हिसाब से यादव मुस्लिम का समीकरण टूटता हुआ दिखा पड़ रहा था। यादव बिरादरी भी कुछ मंत्री से नाराज एवं कुछ ओम प्रकाश यादव के प्रभाव में बगावत पर उतारू थी। ऐसे परिवेश में मंत्री का कहीं वोट बैंक स्पष्ट दिखाई न देने के कारण इनके विरोधी इन्हें नम्बर तीन पर इस बार भी मान कर खुश भी थे और लापरवाह हो गये थे। अब वह बसपा को अपना प्रतिद्वंदी मान चुके थे।

इधर अंसारी परिवार जो गंगा पार के मुस्लमानों में भी अपनी पूरी तरह से पकड़ रखता है, उसके बसपा के सांसद अफजाल अंसारी परिवार के दो सदस्यों के समाजवादी पार्टी से अपने राजनीति जीवन की शुरूआत करने के कारण कही से जोखिम लेने की हालत में नहीं थे। मामला परिवारिक था। अफजाल ने बिमारी को आधार बना कर चुनाव में बसपा के प्रचार से काफी दूरी बना ली। इसका उन्हें दो फायदा हुआ एक तो बसपा द्वारा पाटह्ल विरोधी कार्य के दोषी नहीं करार दिये गये दूसरी तरफ वह सपा का मौन समर्थन कर गये। वही इधर शिब्बागतुल्ल्ता अखिलेश के उड़नखटोले के साथ पूरा जिला घुमे लेकिन जमानियां विधान सभा में नहीं आये। ऐसे में विरोधी एक बार फिर अंसारी बंन्धुओं का बसपा की तरफ मौन समर्थन मानते हुए मुस्लिम महिलाओं का मत अपने तरफ मानने की भूल कर बैठे।

जबकि हकीकत यह थी कि अंन्सारी बंधु भी जानते थे कि भाजपा के बुलडोजर बाबा की आंधी में केवल व्यक्तिगत व्यवहार और मुस्लिम यादव मतदाताओं के भरोसे नवप्रवेशियों का विधान सभा पहुँच पाना असंभव था। ऐसे में उन्हें अपना समर्थन हर वर्ग में चाहिए था। ओम प्रकाश सिंह केवल जमानियां में ही नही पूरे पूर्वांचल में अपनी दमदारी रखते थे। अंसारी बंधु भी अपनी

पुरानी अदावत भुला कर इस बार ओपी के तरफ देखते नज़र आये और बहुत ही गोपनीय ढ़ग से जमानियां में ओपी के समर्थन में मुस्लिम मतदाताओं को मोड़ने की दिशा में काम शुरू कर दिये। बारा, गोड़सड़ा सहित अन्य मुस्मिम गांव में मुस्मिम उम्मीद्वार होने के बावजूद 50 प्रतिशत वोट बट जाना इस समीकरण को कही न कही प्रमाणित कर गया।

इधर नाराज यादव मतदाता भी देख चुके थे कि ओपी के विरोधी यादव नेताओं का विरोध जनमानस और उनकी जाति में कोई असर नहीं दिखा पा रहा है, साथ ही दिलदानगर में अखिलेश की सभा में भीड़ उनको पराम्परागत पार्टी की तरफ लौटने पर मजबूर कर दी। आप पार्टी के उम्मीद्वार का हश्र देख कर कोई भी इस बात को आसानी से समझ सकता है। अंसारी बंधुओं के साथ साथ ओमप्रकाश सिंह के सहयोगी मुस्लिम कार्यकर्ताओं ने मुस्लिम मतदाताओं को ओपी के तरफ मोड़ने में कोई कसर बाकी नहीं रखी। वह बसपा के साथ न जाकर परम्परागत सपा का साथ निभाने की अपील करते रहे, समझाते रहे। जिसका कापी असर भी असर भी हुआा।

ओपी के दो महत्पवूर्ण वोट बैंक अब ओपी के साथ थे। ओमप्रकाश वादी उनके साथ थे ही, तीनो ने मिल कर ओपी के इस लडाई को पूरी तरह से गोपनीयता के साथ आसान बना दिया। विरोधी सोशलमीडिया पर गरजते रहे और अन्दर अन्दर सुरंग बनाकर ओपी ने भाजपा के चक्रव्यूह का एक और फाटक जाति समीकरण का बड़ी आसानी से तोड़ दिया।

डा. अखंड प्रताप सिंह
प्रकाशक
साहित्य सरोज

संस्मरण

मेरी यादगार यात्रा

बात बहुत पुरानी नहीं है। अभी गत वर्ष ही २०१६ के ०४ दिसम्बर को मैं अमृत सम्मान के लिए आमंत्रित थी। समारोह भोपाल में था। हमने ०३ दिसंबर का जयपुर सिकंदराबाद एक्सप्रेश में रिजर्वेशन करा लिया। ०३दिसंबर की रात को हम (मैं और मेरे पति) उस ट्रेन से रवाना हो गए । सुबह साढ़े पांच बजे गाड़ी जब उज्जैन पहुंची तो वहाँ दो सभ्य बजुर्ग पुरुष चढ़े । उनका सीट हमारे सामने वाली थी।

चहल पहल से मेरी नींद खुल गई थी। मैंने देखा एक व्यक्ति दोनों सीट पर करीने से चादर बिछाये तकिया कंबल सब लगा दिया। दूसरे व्यक्ति को कुछ करने नहीं दे रहे थे। फिर दोनों अपनी सीट पर सो गए। एक व्यक्ति थोड़ा कराह रहे थे कि तुरंत दूसरे व्यक्ति उठकर पूछे क्या हो रहा है ?

वो पैर की तरफ इशारा किए तो झट उनका पैर दबाने लगे ।.......दोनों एक दुसरे का बहुत सम्मान कर रहे थे द्य मैं समझ गई, ये दोनों भाई हैं ।फिर करीब आठ बजे मैं उठकर बैठ गई । हमारी गाड़ी डेढ़ घंटे की देरी से चल रही थी। वो लोग भी उठ गए थे । बातों से पता चला कि वो राजस्थान के रहने वाले हैं । लेकिन अब हैदराबाद में बस गए हैं । वहाँ उनका बिजनेस है। उन्होंने कहा कि वे दोनों बचपन के दोस्त हैं । मैं आश्चर्य से देखती रह गई द्य मैंने कहा कि आपका प्रेम देखकर तो दोस्त नहीं भाई लग रहे हैं । वे बहुत खुश हुए । उज्जैन में उनके मित्र के बेटे की शादी में आये थे। बातों ही बातों में उन्हें भी ये मालूम हो गया कि मैं कविता गजल वगैरह लिखती हूँ। फिर वो बहुत खुश हुए और कहने लगे कि वे लोग कवि सम्मेलन के बहुत शौकीन हैं। वे दोनों गजल मुक्तक सुनाने लगे और मुझे भी सुनाने की जिद करने लगे । कई गजल उन लोगों ने सुनाई और मैंने भी सुनायी । हमारी गाड़ी साढ़े नौ के बजाय ११बजे पहुँची ।पर समय कैसे निकल गया मालूम ही नहीं हुआ। इस सफर में दोनों व्यक्तियों की दोस्ती में आपसी प्रेम देखकर बहुत आनंद का अनुभव हुआ ।

पूनम झा
कोटा राजस्थान

काव्य का पन्ना

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

अपने
सबसे खराब
दिनों में भी
जो चीज़
मुझे सबसे प्यारी होगी
वो है.........
खुद की स्वतंत्रता

2/

परतंत्र
आदमी
थोड़ा
सुबह मरता है
थोड़ा दोपहर में
और थोड़ा शाम में
और तब तक
मरता रहता है
जब तक जीवित है

3/

देश आगे बढ़े
इसके लिए
जरुरी है
वहां लोग सपने
देखते हो
सपने देखने के लिए
बहुत जरुरी है
लोगों का पेट भरा रहे
भूखे लोग
रोटी की परिधि से
बाहर नहीं झांक पाते है

-राजेश सिंह

निकट सोबो सेंटर, साउथ बोपल
अहमदाबाद -380058
9833775798

प्रेम परीक्षा बस दिलवा दो

प्रेम विषय मैं भी चुन लूंगा
थोड़ा सा अभ्यास करा दो
सहज-सरल थोड़ा हो जाए
मुझको भी अध्ययन करा दो..।।

हो क्रमद्व विषय सूची सब
परिभाषा रसता ले आए
अवलोकन में रमा रहूं मैं
बस थोड़ा अरमान जगा दो..।।

अंक मिले सौ प्रतिशत मुझको
अव्वल रहूं सदा कक्षा में
होगा तुम्हें गर्व भी मुझ पर
प्रेम परीक्षा बस दिलवा दो..।।

कठिन विषय है प्रेम भले ही
त्याग समर्पण सब कर लूंगा
प्रेम साधना को मन आतुर
साधक को खुद से मिलवा दो..।।

परिचय से संबंध निखरता
होती है फिर स्वयं सहजता
चल लूंगा मैं पगडंडी पर
तुम बस चलना मुझे सिखा दो..।।
तुम बस चलना मुझे सिखा दो..।।

विजय कनौजिया
काही-अम्बेडकर नगर

कवर स्टोरी

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

अब होने लगी विभिषण की तलाश

उत्तर प्रदेश में मतगणना हुए 20 दिन बीत चुके हैं। जहां जीते प्रत्याशियों के कुछ समर्थक अब पेट साफ करने की दवा लेने मेडिकल स्टोरों पर पहुँचने लगे हैं वही कुछ समर्थक उन्हें मंत्री बनने के सपने देखने में व्यस्त है। जमानियां विधान सभा में हाल कुछ इससे अगल है। जीते प्रत्याशी ओमप्रकाश के समर्थक केवल जश्न मना रहे हैं और ओपी अपने आगे की रणनीत बनाने में व्यस्त हैं। माना जा रहा है कि सुनीता सिंह अपनी हार के गम से बाहर निकल कर सार्वजनिक जीवन में आते हुए इस बात की खोज में लग गई कि चूक हुई तो कहाँ?किसने साथी बन कर छला? किस गैर ने साथ दिया? कोई विभीषण तो नहीं था ? यदि था तो कौन ? और यदि एक से अधिक था तो कौन-कौन? वह कौन कौन लोग थे जो सच का चेहरा झूठ एवं मक्कारी के बादल बना कर उसके पीछे छुपाये थे? इन जैसे हजारों सवाल अब सुनीता सिंह के सामने हैं।

सुनीता सिंह की हार के बाद समर्थक सोशलमीडिया पर भाजपा को वोट न देने वालो को खिलाफ मार्चो खोले हुए हैं। उन्हें दोगले की औलाद, तेगले की औलाद जैसे पदवी से नवाजने वालो की बाढ़ सी आ गई है, जबकि चुनाव प्रचार के दौरान गहमर के एक दर्जन से कम युवा ही सोशमीडिया पर भाजपा का पक्ष रखते नजर आये। वो ही सोशलमीडिया पर जंग लड़े। जिनमें कुछ से तो लेखक की बहस भी हुई बाकी तो पराजय के बाद बरसाती मेढ़क से टर्र टर्र कर रहे हैं। जो युवक सोशलमीडिया पर अपने उम्मीद्वार के पक्ष में किये गये प्रचार को योगी-मोदी, केन्द्र, राज्य, राम और बुलडोजर तक सीमित रखा। अपने प्रत्याशी के कार्यो को नदारद रखा। इस्लाम से डराने,राम को लाने, मंदिर बनाने, को आधार बना कर भाजपा के पक्ष में वोट मांगा।

वोट न करने पर राष्ट्रवाद और हिन्दूत्व के दुश्मन तक समिति रखा। उन्होनें सुनीता को केन्द्रबिन्दु बनाना उचित नहीं समझा। गलती उनकी भी नहीं थी, जब कोई वरिष्ठ उनको सलाह देने वाला ही नहीं था, तो युवा दिल ने जो कहा वह किया। जितनी उनकी समझ थी चले, यही सकून है कि वह निस्वार्थ चले।

बहुत से प्रचारक ओपी के वायरल वीडियो और बयानो को हवा दे तो दे रहे थे लेकिन सुनीता के गहमर के बाहर की सभाओं को बाहर के बयान के बयानो को उनके कामो को पोस्ट न करते हुए सुनीता कम ओपी का सोशलमीडिया पर अधिक प्रचार कर बैठें। सुनीता की टीम ने नाराज लोगो को मनाने का अधिक प्रयास भी नहीं किया। नाराज को विरोधी करार दिया। सुनीता के

चुनावी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

प्रचार-प्रसार में कुछ भी ठीक नहीं चल रहा था, जिसकी सूचना उनके कुछ समर्थकों ने दिया, परन्तु वह या तो पागल करा दिये गये या वीभिषणों की हवाई फायरिंग में मारे गये।

यह तो तय है कि सुनीता सिंह के हार की प्रमुख वजहो में उनकी कार्य प्रणाली दोषी है। कोरोना काल में उनका न निकलना, जनता के बीच अपनी छवि न बना पाना, स्थानीय स्तर पर पंचायत चुनावों में सीधा भाग लेना, अपने विरोधीयों, ना-खुशो एवं पुराने कार्यकर्ताओं की अवहेलना करना, रेल आंन्दोलन का विरोध, स्थानीय स्तर पर कामों में भ्रष्टाचार के विरोध में न खड़ा होना, चुनाव के कुछ समय पहले योगी का साथ छोड़ कर केशव प्रसाद मौर्य गुट में सामिल जैसे कई कारण उनके विपरीत थे।

लेकिन जब हर मतदाता एक ही बात कह रहा हो कि वह सुनीता नहीं योगी-मोदी को देख रहा है ऐसे में उनके व्यक्तिगत कार्य प्रणाली का दोष, उनके जनमानस से दूर रहने का दोष जनता विरोधी को 22 हजार अधिक मत देकर नहीं देगी। इस का मतलब साफ है खाया पी कर भाजपा जिंदाबाद और मतदान कही और।

सुनीता की हार में चुनाव से पूर्व मनीष सिंह बीटू, वरूण पाण्डेय, मानवेन्द्र सिंह, अमित सिंह पुत्र सिंहासन सिंह, पूर्व प्रधान करहियां सहित आधे दर्जन से अधिक लोगों ने खुद को भावी प्रत्याशी घोषित किये लोगो का योगदान भी कम नहीं दिखाता। वह भाजपा के नेता होने के बाद भी केवल मोदी-योगी जैसे बड़े नेताओं के आने पर ही भाजपा जन के साथ फोटो खिचाते दिखाई दिये लेकिन क्षेत्र में पार्टी के पक्ष में प्रचार प्रसार दिन रात एक करते कही दिखे नहीं।

टिकट नहीं मिलने से नाराज भावी प्रत्याशी जानते थे कि सुनीता के हार में उनकी दो तरफा जीत है एक तो वह यह साबित करने में सफल हो जायेगें कि सुनीता एक कमजोर नेता है जनमानस में उनकी पकड़ नहीं दूसरी तरफ वह इस बात को साबित करने का मौका पा जायेगें कि यदि उनको टिकट मिला होता तो कहानी कुछ और होती। अगले वर्ष उनको टिकट दिया जाये।

अपने आपको कुशवाहा नेता करार देने वाले टिकट की दौड़ में शामिल मुरली कुशवाहा भी कुशवाहों में न जोश भरते नजर ओ और न वोटो का भाजपा के पक्ष में घ्रुव्रीकरण करते नज़र आये। यही कारण है कि नाराज कुशवाहा वोट ओपी के बढ़त को बडी आसानी से बडा दिया । क्षेत्र के कुछ भाजपाईयों ने गुड़ खाये गुल्गुल्ला से परहेज के तर्ज पर सुनीता से विरोध महेन्द्र पाण्डेय से लगाव की पर चंदौली सीट पर ध्यान देना शुरू कर दिया। पुराने कार्यकर्ता जमीन से पूरी तरह गायब रहे। सुनीतावादी लोग उपाय न सूझने से परेशान। दावे के साथ कहा जाता सकता है कि भावी प्रत्याशीयों ने और उनके सहयोगी ने यदि अपना रोल निभाया होता तो विभीषण सफल नहीं होते और ना भाजपा हर मतगणना के हर चक्र में पीछे रहती।

विभिषण का रोल किसने किसने कैसे कैसे निभाया है ? यह पराजित प्रत्याशी खुद अपने विवेक से तय कर ही लेगा और आज नहीं कल तो जनता के सामने आ ही जायेगा लेकिन रणनीतिकार इस बात से मुकर नहीं सकते कि जमानियां में भाजपा की हार में जितना दोषी खुद भाजपा है उतना विरोधी नहीं । विरोधी तो सामने थे, उनकी गणना उनके मत में नही थी लेकिन जो हर कदम साथ थे उसमें कौन अपना था कौन गैर था ? इसकी पहचान अब प्रत्याशी के साथ-साथ समर्थकों और कार्यकर्ताओं को करनी होगी, नहीं तो यह पराजत का सिलसिला रूकने का नाम नह लेगा और यदि पराजित प्रत्याशी को अर्जुन की भांति अपना राजनीतिक कैरियर आगे ले जाना है तो उसे भी एक अभिमन्यु तैयार करना ही होगा। उसे अपने अस्त्र-शस्त्र देना ही होगा, खुद को शीर्ष नेताओं से संबंध बनाये रखने में समर्पित करना ही होगा।

डा. अखंड प्रताप सिंह
प्रकाशक
साहित्य सरोज

व्यंग्य

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

सम्मानालय

बहुत खोजने पर भी जब, हम दोनों को ही कोई मुद्दा नहीं मिला तो घूमने निकल गए। शहर हमारे लिए नया था। थोड़ा ही आगे पहुँचे कि एक दुकान पर लगा बोर्ड देख कर मैंने 'इन्हें' रोका- देखो तो क्या लिखा है?

दोनों के मुख से एकसाथ निकला "सम्मानालय"।

बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था; गलत पढ़ लेने की कोई गुंजाइश नहीं थी। हद हो गई। ऐसा भी कोई लिखता है। दोनों को करंट सा लगा। वैसे अगर पति- पत्नी आपस में बहस न करें तो दुनिया में कई मुद्दे हैं बहस के लिए। सामने खड़े ठेले वाले से इन्होंने पूछा "ये कैसी दुकान है भाई"? उसने इन्हें सिर से पैर तक घूरा फिर टेढ़ी हँसी हँस कर बोला "पढ़ लीजिए न, पढ़े लिखे तो लग रहे हैं"। इतनी इज़्ज़त एक मुश्त पा कर 'ये' बेचारे लजा गए।

मैं इन्हें पीछे करके खुद मोर्चे पर आ गई।

मैंने कहा भैया, भोजनालय, औषधालय, मदिरालय, शौचालय वगैरह तो सुना था मगर सम्मानालय , हद हो गई। ऐसा तो पहले कभी नहीं देखा।

वह बोला- देखते कैसे, इस शहर में आज ही तो दिखे हैं।

मैं- क्यों यह शहर बाकियों से अलग है क्या?

जी बिल्कुल है। यह सम्मानित लोगों का शहर है।

तो क्या बाकी असम्मानित लोगों के हैं?

मैने कहा तो वह हमारी उपेक्षा पर उतर आया। मसले आलू की गोल- गोल टिकियाँ बनाने लगा। फिर स्टोव तेज करके उसने मेरे तीखे प्रश्न को धुएँ में उड़ा दिया।

हम अपने आश्चर्य में डूबते- उतराते आगे बढ़े जा रहे थे। कुछ कदम खुद को चला कर हम सम्मानालय के सामने पहुँच गए। 'ये' ठिठक गए। मैं इन्हें ठेलते हुए अंदर ले गई। काउंटर पर एक सुंदरी विराजमान थी। उसने हमसे नमस्ते की। हमने पूछा यहाँ क्या मिलता है।

सम्मान- कह कर उसने हम दोनों पर पलकों की उठा -पटक की। मुझे तो ऐसे देखा जैसे कोई ग्रामीण महरिया कण्डे पाथना छोड़ कर गोबर लगे हाथ लिए एयरपोर्ट पहुँच गई हो। मगर ऐसा कैसे हो सकता है? आप सम्मान कैसे बेच सकते हैं? मैंने उसके देखने की परवाह नहीं की।

जब लोग खरीदने को तैयार हैं तो हम बेच क्यों नहीं सकते?

तो क्या लोग खरीदने भी आते हैं।

जी हाँ। आते हैं।

वैसे फेरी लगा कर भी बेचा जा सकता है। इससे सम्मान की पहुँच बढ़ेगी। गली- गली , मोहल्ले- मोहल्ले पहुँच जाएगा सम्मान। आखिर सम्मान को भी पता लगना चाहिए कि वह अभिजात्य नहीं, सर्वहारा भी है। ग्राहक बढ़ेंगे। बिजनेस अच्छा चलेगा खैर उसने पूछा नहीं तो क्यों बताऊँ! मेरे भीतर चल रहे उच्च कोटि विमर्श से अनजान उस सुंदरी ने हम अज्ञानियों को ज्ञान देने का मन बना लिया। वह काउंटर से निकल कर आई और हमें ले जा कर बगल में रखे सोफे पर बैठ गई।

मैंने बैठते- बैठते कहा-

-माना सम्मान बिकता है, लोग खरीदते हैं। लेकिन यह कैसे तय होता है कि कौन सा सम्मान ठीक रहेगा यानी क्रेता का संकट? वह आँखों पर से बाल हटाते हुए बोली दृ कोई संकट- वंकट नहीं। क्रेता अपना बजट बताता है। उसी रेंज का सम्मान हम उसे दे देते हैं।

इतना कहते दृ कहते सामने से एक लड़का प्रकट हुआ जो सुंदरी के हाथ में कुछ थमा कर गया। सुंदरी ने उसे खोलते हुए हमें दिखाया और स्पष्ट किया , " यह कैटलॉग है। आराम से देखिए। "। वह हमें सी डब्ल्यू (कक्षा कार्य) दे कर वापिस जा कर काउंटर पर खड़ी हो गई। कैटलहग में सम्मानों की सूची एवम उनके रेट लिखे थे। इसके साथ ही किनके हाथों सम्मान लेना है इसकी भी सूची, नाम और फोटो के साथ

व्यंग्य

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

वर्णित थी।

अब हम दोनों कुछ पल खामोश रह कर इस सनसनीखेज़ दस्तावेज़ का अध्ययन कर रहे थे। उसे लगा' ये मंदबुद्धि दम्पति शायद समझ नहीं पा रहे, नैतिक मूल्य कितने उच्च स्तर पर पहुँच गए हैं। इतने उच्च हैं कि बिना सीढ़ी पर चढ़े इन्हें छुआ भी नहीं जा सकता, पाना तो दूर।व्यवसायियों ने यह सीढ़ी परोपकार की भावना से उपलब्ध कराई है। इस धंधे से वे बिल्कुल भी मुनाफा नहीं कमा रहे हैं। वे तो केवल लागत मूल्य ही ले रहे हैं। 'इनने' अपनी इनकम बढ़ाने की सम्भावनाएँ तलाशते हुए पूछा- यह आईडिया आपको कैसे आया?

सुंदरी श्रद्धा पूर्वक आँखें बंद करके बोली दृ यह आईडिया कंटे शागिर्द की देन है। वे दलाली किया करते थे।

किसकी?

रेत, गिट्टी, सिलेंडर... जिसकी मिल जाए उसकी। वह टैक्सी स्टैंड देख रहे हैं, उसने अंगुली दिखाई। हमारी दृष्टि अब उसकी बंधुआ थी, वहीं गई , जहाँ ले जाई गई।

वहाँ उस बिजली के खंभे के पास दिन- दिन भर खड़े रहते थे शागिर्द। बसों, टैक्सियों से हफ्ता वसूलते थे। जब पुलिस मजबूरन दलालों पर सक्रिय हो जाती तब वे यही करके खर्चा निकालते थे। बीच के समय में पान की गुमटी पर अखबार देख लिया करते। एक दिन स्वास्थ्य विभाग ने अवसाद और खुदकुशी करने वालों के आंकड़े छापे। उसमें लेखकों और कवियों की अच्छी संख्या थी। बस शागिर्द को सम्मानालय के आईडिया का दर्शन प्रकाश पुंज के साथ हुआ।वे बेचैन रहने लगे।

कई लेखक बिना सम्मान या पुरस्कर के उदास हो जाते हैं। एक आए थे। बोले कलम की स्याही में डूब मरने को जी करता है। एक और आए, कहने लगे की- बोर्ड पर अंगुलियाँ पटकते- पटकते सिर पटकने का मन हो गया है। कन्टे शागिर्द को चैन तब आया जब उसने अपनी नवाचारी सोच से इस पुनीत व्यवसाय की आधारशिला रख दी।

सुंदरी, इतना कह कर, हम में ग्राहक की उम्मीद लिए पुनः हमारे निकट आई और प्रश्न किया- आपको किसका सम्मान करवाना है?

हमने कहा, "देखिए हमें सम्मान नहीं कराना है, हम तो बस जानना चाहते हैं कि इस तरह का बिजनेस भी चलन में आ गया है। हम हैरान हैं। विश्वास नहीं होता कि बीच- बाज़ार दुकान लगा कर सम्मान बेचे जा रहे हैं। खरीदे जा रहे हैं। हमारे लिए तो यह मुनिस्पेल्टी के नल से पानी की जगह चाय निकलने जैसा हैरतंगेज है।"

उसने अपने प्रशिक्षण कौशल का प्रयोग करते हुए हमें समझाया, " इसमें हैरानी की क्या बात है? बाज़ार तो माँग और आपूर्ति के सिद्धांत पर कार्य करता है। आजकल सम्मान की माँग बहुत बढ़ गई है। हमने देखा लोग परेशान होते रहते हैं। आदमी लोन ले कर घर बनवाता है। बाहर के कमरे में शो केस बनवाता है। इसमें वह अपनी उपलब्धियां सजाना चाहता है। "

अब तक मैं उससे सहमत हो चली थी, कहा, " तो दुकान से ट्राफी, मोमेंटो वगैरह खरीद कर रख ले। "

उसने मेरे साथ सहमति रखते हुए मेरे ज्ञानका विस्तार किया, " लोग उस अवसर की फोटो भी चाहते हैं... नहीं तो फेसबुक- इंस्टा पर दुनिया को क्या मुँह दिखाएंगे। "

हम दोनों ने एक दृ दूसरे को देखा फिर वापिस उसीका मुँह देखने लगे। निपट गरीब को दौलत मिल रही थी! 'मनहु रंक निधि लूटन लागे'।

वह बोली, " इसीलिए हमारे अखंड ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज़ के मालिक ने यह प्रतिष्ठानों की श्रृंख्ला लान्च की है। इसकी फ्रेंचाइज़ी दो सौ छोटे- बड़े शहरों में हैं।"

'गाँवों में तो हर आदमी के पास फ्रेंचाइज़ी है'- 'ये' बुदबुदाए। मैने चुप रहने के संकेत स्वरूप इनका हाथ दबाया।

सुंदरी को महसूस हुआ हममें संभावनाएं हैं। शायद वह ताड़ गई थी कि मेरे भीतर का छोटा दृ मोटा लेखक, सम्मान की अभिलाषा रखता है। मैंने भी अपने भीतर सकरात्मक परिवर्तन महसूस किया। अब केवल और केवल सौदा पटने की देर है।

अनीता श्रीवास्तव टीकमगढ़

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

वापसी

एक तीखी नोंक-झोंक के बाद शिखा अलमारी में से अपना सामान समेटने लगी। अतीत के गलियारों में डूबते- उतराते हुए धुंधली हुई स्मृतियों से निकलकर उसकी यादों ने उसके आस-पास कुछ चित्र उकेरना शुरू कर दिए। उसने जब से होश संभाला था कुछ तल्ख आवाजों और हाथा-पाई के बाद रोना- पीटना फिर एक दूसरे पर शिकवे- शिकायतों और उलाहनों के साथ पिता का भड़ास निकालते हुए माँ से कहना!.. तेरा बाप ही आया था!.. भोंपा रचाने (शादी करने) अरे !.. अगर पहले मालूम होता ऐसी कर्कशा बीबी मिलेगी तो जीवन भर कुँवारा रह जाता पर तुझसे शादी नहीं करता। किसी से क्या शिकायत करूँ कर्म की गति है पूरी दुनिया में मेरे लिए यही रची थी भगवान ने ? ना अक्ल की ना शक्ल की... गलती तो मेरे माँ-बाप की ही है। जो बिना देखे-समझे उठा लाये इस ढोर को।..तभी दादी अम्मा समझाने वाले अंदाज में कहतीं - चलो अब उठ जाओ क्या क्लेश ही मचाती रहोगी जब मालूम है कि अरविंद स्वभाव का तेज है तो जबरन मुँह लगती हो उसके..

तब मां तड़पकर कहती।..ये भी बाप तक क्यों जाते हैं हर वक्त?. खुद की शक्ल देखी है आईने में... कहीं ब्याह नहीं हो रहा था!.. सो चले आये बैंड-बाजा लेकर और फंसा लिया मेरे पापा को... अपनी मीठी -मीठी बातों में बस, उसी का भुगत रही हूँ जब से शादी हुई एक पल को चैन नहीं मिला। और आप भी ना अपने बेटे का ही पक्ष लेती हो हर वक्त सब समझती हूँ मुझे कोई अपना नहीं समझता इस घर में। कहते कहते रो पड़तीं ।

तब दादी सर ठोकती हुई यह कहकर आगे बढ़ जातीं "हमारी ही मत मारी गई थी जो इन मूढ़मतियों के झगड़े में पड़े ...गधे पर बस नहीं चला तो गधैया के कान ऐंठन लगीं"..। जब मां को कुछ नहीं सूझता तो उठ कर फिर से अपने काम-काज में लग जाती । किचिन में उसके तेजी से चलते हाथ.इशारे से उसे बुलाकर कहतीं ! देख पापा चले न जाएँ!..दादी को ये चाय दे आ जल्दी!.. फिर सूजी हुई आँखों में शिकायतों का ढेर भरकर कहतीं - अभी तो उनका मुंह भी गुब्बारे की तरह फूला होगा।

तब शिखा का मासूम मन विचलित हो जाता उसके मन में माँ के लिए अपार प्रेम उमड़ पड़ता मन ही मन सोचती- सच में कोई नहीं है बिचारी का। उसका छोटा सा दिमाग तब प्रश्न करता। माँ इतना सुनने और लड़ने के बाद भी सबकी चिंता क्यों करती रहती है?..और अगर चिंता करती है तो लड़ाई क्यों करती है?.. चुपचाप सबकी सुन क्यों नहीं लेती? किन्तु तब वह नहीं समझ पाती थी कि यह लड़ाई उसकी परिवार जनों से नहीं उस के अपने अस्तित्व को बचाने की लड़ाई है। लड़ाई है उस व्यवस्था के खिलाफ जो औरत को. बच्चे पैदा करने और घर का काम करने की मशीन की तरह इस्तेमाल करना तो जानते हैं पर उसके अस्तित्व, इच्छाओं, आकांक्षाओं यहाँ तक कि उसके स्वाभिमान को भी उस हवन वेदी में जला दिया जाता है जिसके चारों ओर वह सात वचन के साथ सात फेरे लेती है। अपना घर, परिवार ,कुटुंब छोड़कर अंजाने व्यक्ति का हाथ थाम कर चल देती है। पलभर में उसकी पहचान उसका परिवार सब बदल जाते हैं । उसका सुख-दुःख उसके पति ओर उससे जुड़े हर सदस्य से हो जाता है जो नए रिश्ते से बंधकर उसका अपना कहलाने लगता है। माँ का तो पता नहीं!. . पर उसने हमेशा महसूस किया था। इतने सालों के बाद भी माँ को दिल से कोई भी अपना ना सका था। हर सुख- दुःख में उसे सिर्फ "यूज" किया जाता रहा एक मशीन की तरह... जिसे काम होने के बाद किनारे पर रख दिया जाता है। उसे कभी भी अपनेपन का एहसास नहीं दिलाया जाता सारे महत्वपूर्ण निर्णय दादी,बुआ ओर पापा मिलकर लेते थे निर्णय के समय माँ की अहमियत को नकार दिया जाता , तब माँ अँदर से दरकने लगती , वह अपने अँदर की घुटन और बेबसी को अपने बंद कमरे की दीवारों के साथ रोकर निकालती थी। परन्तु अपने कर्तव्यपथ से कभी विचलित नहीं होती । रोने के बाद सूजी हुई आँखों को छुपाते हुए पूछती - माँजी आज खाने

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

में क्या बनना है ? उस वक़्त शिखा सोचती ... मैं शादी कभी नहीं करुँगी !..अपने आप को प्रताड़ित करने से अच्छा है ।अकेले जिंदगी बसर करना ।जीवन के इसी पारिवारिक उतार-चढ़ाव के साथ दोंनों भाई-बहिन कब बड़े हो गए पता ही नहीं चला।

पूरे घर पर राज्य करने वाली दादी अपनी सुलक्षणा बहू पर आशीषों की झड़ी लगाते हुए स्वर्गलोक सिधार गईं। ढलती उम्र ने पिता को कब नेक दिल इंसान बना दिया जो माँ की परवाह करना सीख गये अब तो माँ का सिरदर्द भी उन के लिए चिंता का विषय हो जाता था। आज भी उसे वह पल याद है जब एक दिन पिताजी माँ की तारीफ करते हुए कह रहे थे। बेटा तेरी मां जैसी पत्नी पाकर में धन्य हो गया अगर तेरी माँ ने मेरा साथ नहीं दिया होता तो गृहस्थी की गाडी यहाँ तक खिंच ही नहीं पाती... कैसे होता तुम दोनों बच्चों और इतने बड़े परिवार का लालन पालन?...

पर उनका यह सब कहना या सुनाना उसे व्यर्थ ही लगता कारण उसकी अपनी सोच जो बालमन से ही उसके अंतःकरण में बैठ गयी थी बलवती हो कर कह उठती - भूल गई माँ के बहाये आँसू। इसी के साथ वह अँदर से और उग्र हो उठती ।वह सोचती माँ ने अपनी जिंदगी बर्बाद कर दी पर मैं ऐसा कुछ नहीं करुँगी। शादी कर के जीवन बर्बाद करने से अच्छा है बिना शादी के मैं उस व्यक्ति के साथ रहूँगी जो मुझे पसंद हो और मेरे अनुसार चल सके मुझसे शादी करके अपने ऊपर थोपे जाने का दोष ना दे ।जिसके साथ मुझे एक दबाव के साथ ना रहना पड़े ।अगर पटी तो ठीक है नहीं तो तेरा रास्ता अलग.. मेरा रास्ता अलग।

एक खूबसूरत ज़िंदगी होगी जिसमें हम एक दूसरे के साथ सामंजस्य से जी सकेंगे इन्ही विचारों के चलते शिखा ने सारे घर की अनिच्छा के बाद भी बिना विवाह किए राकेश के साथ रहना स्वीकार कर लिया। उस वक्त सुन्दर सौम्य राकेश में उसे दुनिया की हर खूबी नज़र आती थी। शिखा की हर ख्वाहिश को पूरा करना ही जैसे राकेश का मकसद था उसकी बाहों में दुनिया जहान का सुख सिमट कर आ गया अपने निर्णय पर पूर्ण रूप से संतुष्ट और खुश थी वह । उसने अपनी माँ जैसी गलती नहीं की दूसरों का बोझ ढो-ढो कर बेचारी बूढी हो गयी किन्तु आज जो हुआ वह उसके लिए किसी वज्रपात से कम नहीं था लिव-इन-रिलेशनशिप में बारह साल रहने के बाद उसका कथित पति उससे कह रहा था तुम जैसी लडकियाँ पान की तरह होती हैं जब रस निचुड़ जाए तो थूकना ही बेहतर होता है।

तुमने भी तो मेरा पैसा,रुतवा और मेरी खूबसूरती देखकर मेरे साथ रहने का निर्णय किया था । तुमने भी एन्जाय किया मैंने भी फिर अब कष्ट किस बात का है ? पता है तुम्हारे ऊपर मेरा कितना पैसा खर्च हुआ है । फिर तुम्हारे जैसी लड़कियाँ घर,गृहस्थी, परिवार क्या जानें... ना ही किसी की सगी हो सकती है। खानदानी लड़कियाँ अलग ही होतीं हैं जो लड़की शादी के पहले ही अपनी आबरू लुटा दे उसका क्या ईमान-धर्म?तुम्हारी बातों में आकर मैंने अपना बहुमूल्य समय यूँ ही बर्बाद किया। तुम्हारे साथ से अच्छा तो मैं किसी अनपढ़-गंवार से शादी कर लेता तो आज घर तो बना देती मेरा तुम्हारी तरह घर को सराय नहीं!..अब फूटो यहाँ से !..मैं तुम्हारे संग एक पल भी नहीं रह सकता। माँ ने मेरे लिए लड़की देखी है। कल मेरा रिश्ता पक्का हो रहा है । मेरी परिवार के प्रति भी कुछ जिम्मेदारी हैं तुम्हारा क्या मैं नहीं तो किसी और के साथ रह लोगी हम इज्जतदार लोग हैं और इज्जत से ही रहना पसंद करते हैं ।

उसके चीखने-चिल्लाने और रोने का राकेश पर रंच मात्र भी असर नहीं पड़ा उसकी भावनाऐं जैसे पत्थर हो गयी थीं।फरमान सुनाकर जाते राकेश को वह किसी बुत की तरह निरुत्तर खड़ी देखती रही।

उसका एक गलत निर्णय इतनी भयावह स्थिति को पैदा कर सकता है उसने सोचा भी नहीं था कि एक देह आकर्षण और भौतिक सुख सुविधाओं की संतुष्टि ही जीवन के लिए सब कुछ नहीं होती। एक परिवार के लिए चाहिए संपूर्ण समर्पण का भाव जो एक भारतीय नारी को गौरव से अलंकृत करता है और बना देता है घर में सब से बड़ा और सबका पूजनीय बेटी से बीबी,बहू ,भाभी,
चाची,मामी ,माँ ,दादी ,नानी के साथ ही एक ऐसे समृद्ध परिवार की मालकिन जहाँ का पत्ता भी उसकी मर्जी से खड़कता है। आज उसके पास कुछ भी नहीं है इस प्रौढ़ावस्था में वह कहाँ जायेगी!..क्या आज उसकी संस्कारों के घर में वापसी है? उस वक़्त शिखा सोचती ... मैं शादी कभी नहीं करुँगी ।..अपने आप को प्रताड़ित करने से अच्छा है । अकेले जिंदगी बसर करना ।

जीवन के इसी पारिवारिक उतार-चढ़ाव के साथ दोंनों भाई-बहिन कब बड़े हो गए पता ही नहीं चला। पूरे घर पर राज्य करने वाली दादी अपनी सुलक्षणा बहू पर आशीषों की झड़ी लगाते हुए स्वर्गलोक सिधार गईं। ढलती उम्र ने पिता को कब नेक दिल इंसान बना दिया जो माँ की परवाह करना सीख गये अब तो माँ का सिरदर्द भी उन के लिए चिंता का विषय हो जाता था। आज भी उसे वह पल याद है जब एक दिन पिताजी माँ की तारीफ करते हुए कह रहे थे।

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

बेटा तेरी मां जैसी पत्नी पाकर में धन्य हो गया अगर तेरी माँ ने मेरा साथ नहीं दिया होता तो गृहस्थी की गाडी यहाँ तक खिंच ही नहीं पाती... कैसे होता तुम दोनों बच्चों और इतने बड़े परिवार का लालन पालन?...

पर उनका यह सब कहना या सुनाना उसे व्यर्थ ही लगता कारण उसकी अपनी सोच जो बालमन से ही उसके अंतःकरण में बैठ गयी थी बलवती हो कर कह उठती - भूल गई माँ के बहाये आँसू। इसी के साथ वह अँदर से और उग्र हो उठती ।वह सोचती माँ ने अपनी जिंदगी बर्बाद कर दी पर मैं ऐसा कुछ नहीं करुँगी। शादी कर के जीवन बर्बाद करने से अच्छा है बिना शादी के मैं उस व्यक्ति के साथ रहूँगी जो मुझे पसंद हो और मेरे अनुसार चल सके मुझसे शादी करके अपने ऊपर थोपे जाने का दोष ना दे ।जिसके साथ मुझे एक दबाव के साथ ना रहना पड़े ।अगर पटी तो ठीक है नहीं तो तेरा रास्ता अलग.. मेरा रास्ता अलग।

एक खूबसूरत ज़िंदगी होगी जिसमें हम एक दूसरे के साथ सामंजस्य से जी सकेंगे इन्ही विचारों के चलते शिखा ने सारे घर की अनिच्छा के बाद भी बिना विवाह किए राकेश के साथ रहना स्वीकार कर लिया। उस वक्त सुन्दर सौम्य राकेश में उसे दुनिया की हर खूबी नज़र आती थी। शिखा की हर ख्वाहिश को पूरा करना ही जैसे राकेश का मकसद था उसकी बाहों में दुनिया जहान का सुख सिमट कर आ गया अपने निर्णय पर पूर्ण रूप से संतुष्ट और खुश थी वह ।

उसने अपनी माँ जैसी गलती नहीं की दूसरों का बोझ ढो-ढो कर बेचारी बूढी हो गयी किन्तु आज जो हुआ वह उसके लिए किसी वज्रपात से कम नहीं था लिव-इन-रिलेशनशिप में बारह साल रहने के बाद उसका कथित पति उससे कह रहा था तुम जैसी लडकियाँ पान की तरह होती हैं जब रस निचुड़ जाए तो थूकना ही बेहतर होता है तुमने भी तो मेरा पैसा,रुतवा और मेरी खूबसूरती देखकर मेरे साथ रहने का निर्णय किया था ।तुमने भी एन्जहय किया मैंने भी फिर अब कष्ट किस बात का है ? पता है तुम्हारे ऊपर मेरा कितना पैसा खर्च हुआ है । फिर तुम्हारे जैसी लड़कियाँ घर,गृहस्थी, परिवार क्या जानें... ना ही किसी की सगी हो सकती है। खानदानी लड़कियाँ अलग ही होतीं हैं जो लड़की शादी के पहले ही अपनी आबरू लुटा दे उसका क्या ईमान-धर्म?तुम्हारी बातों में आकर मैंने अपना बहुमूल्य समय यूँ ही बर्बाद किया। तुम्हारे साथ से अच्छा तो मैं किसी अनपढ़-गंवार से शादी कर लेता तो आज घर तो बना देती मेरा तुम्हारी तरह घर को सराय नहीं। अब फूटो यहाँ से। ..मैं तुम्हारे संग एक पल भी नहीं रह सकता। माँ ने मेरे लिए लड़की देखी है। कल मेरा रिश्ता पक्का हो रहा है । मेरी परिवार के प्रति भी कुछ जिम्मेदारी हैं तुम्हारा क्या मैं नहीं तो किसी और के साथ रह लोगी हम इज्जतदार लोग हैं और इज्जत से ही रहना पसंद करते हैं ।उसके चीखने-चिल्लाने और रोने का राकेश पर रंच मात्र भी असर नहीं पड़ा उसकी भावनाऐं जैसे पत्थर हो गयी थीं। फरमान सुनाकर जाते राकेश को वह किसी बुत की तरह निरुत्तर खड़ी देखती रही।

उसका एक गलत निर्णय इतनी भयावह स्थिति को पैदा कर सकता है उसने सोचा भी नहीं था कि एक देह आकर्षण और भौतिक सुख सुविधाओं की संतुष्टि ही जीवन के लिए सब कुछ नहीं होती। एक परिवार के लिए चाहिए संपूर्ण समर्पण का भाव जो एक भारतीय नारी को गौरव से अलंकृत करता है और बना देता है घर में सब से बड़ा और सबका पूजनीय बेटी से बीबी,बहू ,भाभी, चाची,मामी ,माँ ,दादी ,नानी के साथ ही एक ऐसे समृद्ध परिवार की मालकिन जहाँ का पत्ता भी उसकी मर्जी से खड़कता है। आज उसके पास कुछ भी नहीं है इस प्रौढ़ावस्था में वह कहाँ जायेगी। ..क्या आज उसकी संस्कारों के घर में वापसी है?..... ही करते हैं ।जब हम खुलकर हंस ही नहीं पाते हैं । तो हास्य लेखन कैसे कर पाएंगे ।

यही वजह है कि हम दु:ख, दर्द और खुशी भी लिख लेते हैं लेकिन स्वस्थ हास्य नहीं लिख पाते हैं । जबकि हास्य हमें स्वस्थ रखने में अहम् भूमिका निभाती है ।इसलिए हमें स्वयं को हमेशा नकारात्मकता से दूर रखकर सकारात्मक रखने की कोशिश करना चाहिए। क्योंकि एक स्वस्थ मन ही स्वस्थ विचार उत्पन्न करता है और स्वस्थ विचार ही स्वस्थ रचना का सृजन कर सकता है ।

रेखा दुबे
विदिशा ॒मध्यप्रदेश॑

””

काव्य कोना

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

चलना होगा

चलना होगा तब तक
चलती है सांस जब तक।।

दिवस, पाख,मास
चलते सूरज, चांद, सितारे
;तुएं चलती, मौसम चलता
चलते ग्रह-नक्षत्र सारे।।

अचला चलती, नदियां चलत
चलत सागर की लहरें,
नदियों के संग धारा चली,
नदी, नाले और नहरें।।

सुबह चलती,शाम चलती
चलतीं रातें सारी,
रातों में सपने चलते
सपनों के संग अनुरागी।।

सुख-दुख चलते रहते
धूप-छांव जैसे,
जब सारा जग चलता
न चलें हम कैसे?

रिश्ते नाते इस जग के
चलते रहते तब तक
जीवन चलता जब तक
मरण न होता तब तक।।

महेन्द्र "अटकलपच्चू"
ललितपुर
मो. 8858899720

हर्षित मन

मुरझाये से मन होंगे हर्षित
वन फूलों से भर जायेगा ।
आम्रबौर का रस पी पीकर
भँवरों का समूह हर्षायेगा।

आने ही वाला है अब बसंत
अम्बर व धरा मुस्काने लगे।
हैं सप्त राग कानों में बजते
पवन भी गीत सुनाने लगे।
चाँद चाँदनी पर मोहित जग
द्वि छवि सबको ही भायेगा।

फूलों की गलियों में कान्हा
राधा की छवि यमुना तीरे।
दोनों की छवि मनमें गढ़के
पायेंगे कवि शब्दों के हीरे।
कान्हा और राधे की भक्ति
मनमें वह सबके जगायेगा।

कोयल कू कू कर डोलेगी
पशु-पक्षी सब होंगे मुदित।
मौसम छोड़ेगा शीत वसन
सूरज की किरणें प्रमुदित।
आम्रबौर का रस पी पीकर
भँवरों का समूह हर्षायेगा।

डॉ सरला सिंह "स्निग्धा"
दिल्ली

वफा की

तुम तो बड़े बेवफ़ा हो जी
वफ़ा की कद्र नहीं तुमको
कहीं तुम आंख लड़ाते हो
कहीं पर बात बढ़ाते जी
किसी को हक नहीं मिलता
कहीं तुम इश्क लड़ाते जी
बड़े अईयाश लगते हो
तुम तो बड़े बेवफ़ा हो जी
हुस्न के आरजू में तुम हर
इक कन्या बदलते हो
कभी तुम इस गली जाते
कभी तुम उस गली में जी
है ये इल्ज़ाम नहीं तुमको
है हकीकत तुम्हारा जी
बड़े मगरुर लगते हो
तुम तो बड़े बेवफ़ा हो जी
जवानी चंद चिड़िया है
संभल तुम अब भी जाओ जी

खुशबू शर्मा दिल्ली

व्यंग्य

देश के मुर्दे नानामऊ घाट

सोनेलाल उर्फ सन्नू आरोही क्रमानुसार अपने पांच भाई-बहनों में तीसरे नंबर पर थे। चूंकि घर मे सब उन्हें प्यार से सन्नू बुलाते थे अतः पूरे गांव में उनका यही टेरा नाम व्यवहार में आ गया था। उन्हें छोड़कर सभी भाई-बहनों के हाथ लाल-पीले हो चुके थे। किन्तु दुर्भाग्यवश बेचारे सन्नू शादी के लड्डू की प्रतीक्षा में अभी तक सपनों की खटिया बुन रहे थे। मां-बाप लगभग दस साल पहले अपने इस लाडले बेटे के पाणिग्रहण संस्कार का अधूरा ख्वाब लिए अनंत यात्रा हेतु प्रस्थान कर चुके थे। जवान बेटी का विधवा हो जाना और बेटे का कुँवारा रह जाना दुनिया के दारुण दुखों में से एक हैं। दरअसल उनकी शादी न होंने की वजह उनकी शक्ल-सूरत थी। यद्यपि रंग गोरा था। लम्बाई भी ठीक ठाक ही थी।सिर पर मौजूद बालों की उपस्थिति और कालिमा अल्पमत में आ चुकी थी । जो कि अब रंगरोगन की फरमाइश कर रही थी। खैर यहाँ तक गनीमत थी किन्तु उनके मुखमण्डल को देखकर वैज्ञानिकों के उस तर्क पर यकीन करने पर विवश होना पड़ता था कि आदमी के पूर्वज निश्चय ही बन्दर रहे होंगे। अब इसमें भला बेचारे सन्नू का क्या दोष था?

उनके अग्रज भ्रातागण लगभग आठ वर्ष पहले ही गांव से अपने हिस्से का खेत-टपरिया बेचकर शहर निवासी हो लिए थे जिनके दर्शन अब होली-दीवाली पर भी दुर्लभ ही थे। अलबत्ता बहनें साल-दो साल में मातृभूमि के भूले-भटके चक्कर लगा जाती थीं। सन्नू के हिस्से में लगभग दस बीघा खेत था जो कि एक मध्यम परिवार के लिए पर्याप्त था। किंतु...हाय रे किस्मत! कोई तलाशी नहीं। कोई दिया जलाने वाला नहीं। डेहरी पर खड़े होकर सांझ को कोई इंतज़ार करने वाला नहीं। अक्सर सवेरे को चूल्हा जलाते भोजनोपरांत जो बच जाता उसी बासी भोजन से शाम को पेट पूजा हो जाती। यदि आलस्य शरणम गच्छामि हुए तो फिर तय अर्ध उपवास।।

उस पर पोर पर प्रकट होते ही रक्षपाल जैसे जुल्मी पत्नी द्वारा मिलने वाले अलौकिक सुख की चर्चा करके जले पर नमक छिड़कने में कोई कोताही नहीं बरतते। कहते आज खाने के बाद गोलई की अम्मा ने कहा कि "तुम्हें हमारी कसम है ये एक बेला दूध और पी लो। इतना कहने के बाद में वे सन्नू की ओर देखकर एक आँख दबाना कतई नहीं भूलते हैं। सन्नू ने भागवत प्रवचनकर्ताओं के श्रीमुख से कई बार सुना था कि गंगाजी का स्नान करने से हर मनोकामना पूरी होती है तबसे सन्नू जी ने हर पूरननमासी और अमावस्या को नियमित गंगा स्नान शुरू कर दिया जो कि आज तक अबाध जारी था। मौनी अमावस्या को वे व्रत का पूरी निष्ठा से पालन करते हुए घर से मौन प्रस्थान करते और स्नानोपरांत वे फोन सहित साइलेंट मुद्रा में ही घर लौटते। पूस की हाड़ कँपा देने वाली सर्दी में कटारी की तरह शरीर को काटने वाला पानी भी उनकी श्रद्धा को नहीं डिगा पाया है। जबकि इस समय बड़े-बड़े धुरंधर श्रद्धालु तुलसी बाबा की चौपाई दरस-परस अउ मज्जन पाना में से, 'मज्जन'को छोड़कर पुण्य कमाने के लिए शेष अन्य विकल्पों का ही अनुशरण करते नजर आते हैं। परंतु न जाने क्यों इस भक्त पर मां गंगा की भी कृपा नहीं हो रही है?

निर्जला एकादशी से लेकर कितने अन्य व्रत-उपवास किए किन्तु सब निष्फल। रामदास के परामर्श पर एक बार तो वे धरती माता को दंडवत नापते हुए एक देवस्थान तक हो आए हैं।जिसमें उनके कोहनी और घुटने तक छिलवा चुके हैं। जहाँ जिसने जो कुछ बताया सब किया।बेचारे ने कितने ओझा,गुनिया, फकीरों की ड्योढियाँ मंझाईं, कई बार दक्षिणा और सामग्री के नाम पर ठगे भी गए,किन्तु मामला वही ढाक के तीन पात। तेंतीस कोटि देवी-देवताओं से लेकर पीरों पैगम्बरों आदि तक उन्होंने ऐसा कोई नहीं छोड़ा जिसको अपनी फरियाद न सुनायी? किन्तु सब निठुर निकले। गाँव की तरुणियों के सामने अपने निपट संकोची स्वभाव की वजह से वे कभी प्रणय निवेदन करने का दुस्साहस नहीं कर पाए।वैसे उन्हें कोई स्वयं घास डाले ये संभव नहीं था क्योंकि इसमें उनका चौखटा आड़े आ जाता था।

अब सन्नू बयालीसवें बसन्त में दाखिल हो चुके हैं किंतु जीवन में अभी भी पतझड़ का मौसम ही विद्यमान है। शादी अपने पवित्र उद्देश्य वंशवृद्धि के साथ ही जीवन में संतुलन भी बनाये रखती है। बशर्ते बेमेल न हो

चालीस के बाद अमूमन उम्र अपना प्रभाव दिखाने लगती है जिसमे दाढ़ी से लेकर सिर तक बालों का

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

खिचड़ी-ब्रांड हो जाना,दृष्टिदोष, जोडों की बेवफाई आदि बुराइयां विपक्ष की तरह शारीरिक सत्ता हथियाने हेतु मुखर होने लगती हैं। सन्नू जी के यौवन की लगभग खचाड़ा ब्रांड गाड़ी भी ढलान पर पहुंच चुकी है किन्तु वैवाहिक लड्डू की सुगन्ध और स्वाद की कल्पना उनका मन प्रतिपल बेचैन किए रहती है। कहावत है कि शादी का नाम सुनकर तो मुर्दे भी उठ बैठते हैं फिर वे तो जीवित प्राणी हैं। कुँवारों की अन्तिम उम्मीद आषाढ़ माह में पड़ने वाली भेड़हइया नौमी भी हर बार उन्हें निराश ही कर जाती है गाँव के दक्षिण टोला मे उम्र का अर्धशतक पूरा कर चुके छदामी मसखरा टाइप आदमी हैं। "दुइ अंगुर रुकहु" उनका तकिया कलाम था। चालीस हजार रुपइया खर्च करके बंगाल से चार-पाँच साल पहले शादी कर लाए थे। एक दिन सन्नू को खरबूजे के खेत की मेड़ पर घास छीलते मिल गए। रामजुहार के बाद उपयुक्त अवसर देखकर सन्नू ने हिम्मत करके छदामी से अपने मन की बात कह डाली। उन्होंने कहा, अच्छा दो अंगुल रुको, ससुराल में बात कर लें फिर बताते हैं। लड़कियां तो कई हैं। फिर उन्होंने कुछ फन्नेकट रूपशियों की रूपराशि की चर्चा भी लगे हाथ कर डाली ... ।सन्नू कल्पनाओं में ही उनमें से अपने लिए उपयुक्त षोडशी की छांटबीन करने में मगन हो गए।छदामी ने मानों सूखती फसल को बादल दिखा दिए।अब तो नाउम्मीदी के अंधकार में डूबे अरमानों को उम्मीद की किरन दिखायी देने लगी।जैसे वर्षों से सत्ता महारानी के सानिंध्य हेतु प्रयासरत पार्टी को कुर्सी प्राप्ति का सुगम मार्ग मिल गया।। ठोड़ी पकड़ते हुए बोले, दद्दा ! रोटिकरा का इंतजाम करा दो,ये जीवन तुम्हारा कर्जदार रहेगा।अब तो सुबह- शाम छदामी के दरवाजे पर हाज़िरी देना उनकी दिनचर्या हो चुकी है।रात को भी देर तक बैठक के बाद ही घर आगमन होता।वे रात भर भावी दाम्पत्य जीवन के हसीन ख्वाबों का कम्बल बुनते रहते।इस बीच भूसा, लहडरी(सूखी ज्वार),बाजरे की पुंजिया ं, खरबूजे , प्याज - लहसुन, मूंगफ़ली आदि उपहार स्वरूप बंगालन भाभी की सेवा में नित्य पेश होते रहे।क्योंकि वे उनके लिए तुरुप का इक्के की तरह थीं।

आखिर एक महीने बाद सन्नू को शुभ सूचना प्राप्त हुई कि काम हो जाएगा। छदामी के अनुसार लगभग लाख रुपइया खर्च होना था। जिसमे कपड़े,जेवर और किराए के अतिरिक्त लगभग बीस-तीस हजार रुपये लड़की वाले को भी खर्च हेतु देने थे। सन्नू के लिए ये कोई मुश्किल काम न था। खाने भर को गल्ला छोड़कर बाकी सब गाँव के ही आढ़ती रसूले को तौल दिया। बाकी के लिए दो भैसे थीं वो भी हटा दीं।इस प्रकार अब उनकी अंटी में जरूरत से कुछ बेसी इंतजाम हो गया था।साइबर कैफे से रेलगाड़ी के टिकटों का भी रिजर्वेशन करा लिया गया।

अब सन्नू ने अपने हुलिए की ओवरहालिंग शुरू की जिसमें बाल रँगाई से लेकर ब्यूटीपार्लर गमन इत्यादि सब शामिल रहे। निर्धारित तिथि को अंधेरे ही सन्नू छदामी और बंगालिन भौजी के साथ कलकत्ता को प्रस्थान कर गए जहां से वे उस गाँव पहुंचे जिसमें छदामी की ससुराल थी।अगले दिन सन्नू को लड़कियाँ दिखायी गयीं, जिनमें एक बीस वर्षीय कन्या उन्हें पहली ही नज़र में भा गयी। हालाँकि बुलबुल नामक यह कन्या सांवली थी किन्तु देहयष्टि और उसके तीखे नयननक़्श सन्नू को दीवाना बना चुके थे। छदामी की घरवाली ने लड़की के पिता को साधा और उन्हें विश्वास दिलाया कि उनकी बेटी राज करेगी और उसके बाल- बच्चों का भविष्य संवर जाएगा।आसामी मालदार है।इस प्रकार गरीब परिवार को मुद्रदान करके बुलबुल से उनका पाणिग्रहण करवा दिया गया।

सन्नू अपनी नयी दुल्हनियाँ के साथ घर पधारे।किन्तु अब टोला मुहल्ला सहित पूरा गांव सन्नू महाशय के स्वभाव में दृष्टिगोचर होने वाले अभूतपूर्व परिवर्तन से हतप्रभ था।उनके घर के किवाड़ अब हर घड़ी चिपके रहते हैं और केवल उस समय खुलते जब वे बहिर्गमन करते हैं।बाहर जाते समय भी वे बाहर से साँकल लगाना कतई न भूलते हैं।दरवाजे की हमेशा शोभा बढ़ाने वाले तखत और चारपायी के अब खड़े या पड़े किसी भी मुद्रा में दर्शन दुर्लभ हो चुके हैं। कोई आकर किवाड़ खटखटाए ये उन्हें कतई अच्छा नहीं लगता है।भविष्य के लिए हिदायत देते हुए कहते यार गली से खड़े होकर आवाज लगाया करो।फिर भी कोई आ जाता तो चबूतरे की अपेक्षा गली में जाकर बात करना पसन्द कर रहे हैं। यहां तक कि बच्चों को भी दरवाजे के सामने न खेलने दे रहे हैं। नौधों का गली से गुजरना और दरवाजे के सामने खड़ा होना उन्हें उसी तरह फूटी आंख न भाता है जैसे प्राइवेट बस वालों का अपने अड्डे के पास रोडवेज़ बस का रुकना।आखिर ढलते तरबूज,नौजवानों को पसन्द करें भी तो कैसे?,क्योंकि ये लोग उनकी इश्किया गाड़ी के लिए रेडसिगनल जो होते

हैं।अब उन्होंने रिश्तेदारियों में जाना भी बिल्कुल बन्द कर दिया था।फोन से ही काम चलाते थे।ससुरालियों और अपनी बहनों के अतिरिक्त वे सभी फोन स्वयं ही उठाते हैं ।वे इस बात का पूर्णरूपेण ध्यान रखते हैं कि बुलबुल से किसी गैर की बातचीत भूले से भी न हो। वे प्रतिद्वंद्वी जमाने की नजरों से वाकिफ कंतड़ी प्राणी थे।अतः 'हिरन फलांगे नौ शिकारी सोलह हाथ' वाली कहावत चारितार्थ कर रहे थे।कभी शहर घूमने जाते और यदि कोई परिचित नौजवान मिलता तो नज़र बचाके निकल लेते।कोई दुआ-सलाम करता तो औपचारिकता निभाकर आगे बढ़ लेते।उनकी एक पांव की इस दुर्लभ चिड़िया का मन किसी अशुभ दृष्टि से रत्ती भर भी न भटके इसके लिए वे पूरी एहतियात बरतते। वे स्त्रीरत्न की हिफाज़त शास्त्रानीति के अनुसार ही कर रहे थे।लगभग एक साल रो धो के गुजरा।सन्नू उफनती नदी के वेग को संभाल नहीं पाए।आखिर एक नौजवान के साथ दोगुनी ढलती उम्र कैसे दौड़ सकती है? अभाव असंतोष के जनक होते है जो कि चित्तवृत्तियों को दिग्भ्रमित कर डालते हैं।अंततः वही हुआ जिससे बचने के लिए उन्होंने आरम्भ से ही अतिरिक्त सावधानी का तानाबाना बुना था। अब तो रसिकों की महफ़िल उनकी गली में मधुशाला की शाम की तरह गुलज़ार होने लगी। यूँ समझो उनकी गली देश के मुर्दे नानामऊ घाट हो गयी थी। ऐरे-गैरे नत्थूखैरे चले आ रहे हैं मुंह उठाए। उन्होनें कई बार आपत्ति भी की तो ठलुहों का बहुमत एक सुर में प्रतिवाद करने लगा, "नल के पास खड़े हैं तुम्हारी जगह में नहीं"। अतः पेट्रोल मूतने की जरूरत नहीं है। बेचारे सन्नू असहायों वाली दशा को प्राप्त हो चुके थे। कई बार मन में आता कि कहीं से तमंचा ले आएं और इन सबको गोली मार दें। किन्तु थाने-दरबार से बड़ा डर लगता था । जमघट लगाए फुक्कवे दिन भर मोबाइल पर द्विअर्थी गाने बजाते और उनकी ललचाई निगाहों का केन्द्र सन्नू के किवाड़ ही होते जो कि अब उनके बाहर जाते ही स्वतः साँकलमुक्त हो जाते थे। सन्नू जब लौट के आते तो मेकअपशुदा बुलबुल को एक हाथ से किवारे थामे मुस्कराते हुए नेह- निमन्त्रण बांटते हुए पाते। किन्तु कुछ भी हो ये इंतजार उनके लिए नहीं है वे इसको अच्छी तरह समझते थे। वे आग्नेय नजरों से बुलबुल की ओर देखते लेकिन वहां परवाह किसे थी। भला

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

बैंगन पर भी पानी रुकता है। कई बार बुलबुल के सामने इज्जत की दुहाई दी किन्तु हर बार एक ही टके सा जवाब उन्हें निरुत्तर कर देता कि "तुमसे तो कुछ होता नहीं"।कुछ शब्द तलवार से ज्यादा गहरा घाव करते हैं।अब यक्ष प्रश्न ये भी था कि अपनी व्यथा किससे कहें?कुछ बातें कहते भी तो नहीं बनती हैं। प्यास मर्यादाएं तोड़ती है तो लज्जाहीन हो जाती है फिर वो धोबीघाट नहीं देखती है।

पूरब टोला के तीस वर्षीय छैलबिहारी जो कि अपने नामानुसार ही सुदर्शन थे। दो साल पहले उनकी गृहलक्ष्मी का स्वर्गवास हो चुका था। उनका अब परमानेंट ठिकाना सन्नू की गली हो चुका था। जब देखो वहीं डटे मिलते। लाइन मिली तो अब वे घर भी आने-जाने लगे थे। एक दिन सन्नू बाहर से आए तो देखा कि छैलू खटिया पर डटे हैं और बुलबुल हँसते हुए दाना चुग रही हैं। सन्नू आपे से बाहर होने लगे तो छैलू यह कहते हुए उठ के चल दिए कि भाभी ने बुलाया था तो आ गए।इतना नाराज काहे होते हो?अब पानी सिर के ऊपर हो चुका था। इस जलालत से निजात पाने का कोई और उपाय न देखकर सन्नू ने खेत-टपरिया बेचकर भाइयों के पास शहर जाकर बसने का प्लान बनाया।चार बीघा खेत बेंच भी डाला।बाकी की रजिस्ट्री दो-चार दिन में होने को थी।किन्तु आज सवेरे उठे तो सन्न रह गए।मान-सम्मान और अरमानों पर उल्कापात करके बुलबुल माल-जेवर और समस्त मुद्राएं लेकर छैलू के साथ उनका जाल लेकर फुर्र हो चुकी थी।

ये लड्डू तो स्वाद में बड़ा कड़वा निकला।किन्तु अब वे पर डे होने वाली घनघोर बदनामी की कुढ़न और बुलबुल को खोने के डर से सर्वथामुक्त हो चुके थे।मोह ही दुःख का कारण होता है। ये बात आज उनकी समझ में अच्छी तरह आ चुकी थी। अतः वे मोहमाया को त्यागकर परमानेन्ट वैरागी हो गए।

रामभोले शर्मा"पागल"
हरदोई

द्रौपदी का कर्ज

अभिमन्यु की पत्नी उत्तरा महल में झाड़ू लगा रही थी तो द्रौपदी उसके समीप गईउसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए बोली, "पुत्री भविष्य में कभी तुम पर घोर से घोर विपत्ति भी आए तो कभी अपने किसी नाते-रिश्तेदार की शरण में मत जाना। सीधे भगवान की शरण में जाना।" उत्तरा हैरान होते हुए माता द्रौपदी को निहारते हुए बोली, "आप ऐसा क्यों कह रही हैं माता ?"

द्रौपदी बोली, "क्योंकि यह बात मेरे ऊपर भी बीत चुकी है। जब मेरे पांचों पति कौरवों के साथ जुआ खेल रहे थे, तो अपना सर्वस्व हारने के बाद मुझे भी दांव पर लगाकर हार गए। फिर कौरव पुत्रों ने भरी सभा में मेरा बहुत अपमान किया। मैंने सहायता के लिए अपने पतियों को पुकारा मगर वो सभी अपना सिर नीचे झुकाए बैठे थे। पितामह भीष्म, द्रोण धृतराष्ट्र सभी को मदद के लिए पुकारती रही मगर किसी ने भी मेरी तरफ नहीं देखा, वह सभी आँखें झुकाए आँसू बहाते रहे। सबसे निराशा होकर मैंने श्रीकृष्ण को पुकारा, "आपके सिवाय मेरा और कोई भी नहीं है, तब श्रीकृष्ण तुरंत आए और मेरी रक्षा की।"

जब द्रौपदी पर ऐसी विपत्ति आ रही थी तो द्वारिका में श्री कृष्ण बहुत विचलित होते हैं। क्योंकि उनकी सबसे प्रिय भक्त पर संकट आन पड़ा था। रूकमणि उनसे दुखी होने का कारण पूछती हैं तो वह बताते हैं मेरी सबसे बड़ी भक्त को भरी सभा में नग्न किया जा रहा है। रूकमणि बोलती हैं, "आप जाएँ और उसकी मदद करें।" श्री कृष्ण बोले, "जब तक द्रोपदी मुझे पुकारेगी नहीं मैं कैसे जा सकता हूँ। एक बार वो मुझे पुकार लें तो मैं तुरंत उसके पास जाकर उसकी रक्षा करूँगा। तुम्हें याद होगा जब पाण्डवों ने राजसूर्य यज्ञ करवाया तो शिशुपाल का वध करने के लिए मैंने अपनी उंगली पर चक्र धारण किया तो उससे मेरी उंगली कट गई थी। उस समय "मेरी सभी पत्नियाँ वहीं थी। कोई वैद्य को बुलाने भागी तो कोई औषधि लेने चली गई। मगर उस समय मेरी इस भक्त ने अपनी साड़ी का पल्लू फाड़ा और उसे मेरी उंगली पर बाँध दिया। आज उसी कारण मुझे चुकाना है, लेकिन जब तक वो मुझे पुकारेगी नहीं मैं जा नहीं सकता।" अतः द्रौपदी ने जैसे ही भगवान कृष्ण को पुकारा प्रभु तुरंत ही दौड़े गए।

डॉ.आरती वाजपेयी लखनऊ
वेलनेस कोच एवं लेखिका

उल्लू बनाओ, मुर्ख दिवस मनाओ

किशमिश ,काजू, बादाम सब महज 300रु किलो , फेसबुक पर विज्ञापन की दुकानें भरी पड़ी हैं । सस्ते के लालच में रोज नए नए लोग ग्राहक बन जाते हैं । जैसे ही आपने पेमेंट किया दुकान बंद हो जाती है । मेवे नह आते , जब समझ आता है की आप मूर्ख बन चुके हैं , तब तक बहुत देर हो चुकी होती है । इस डिजिटल दुकानदारी के युग की विशेषता है कि मूर्ख बनाने वाले को कहीं भागना तक नहीं पड़ता, हो सकता है की वह आपके बाजू में ही किसी कंप्यूटर से आपको उल्लू बना रहा हो ।

सीधे सादे , सहज ही सब पर भरोसा कर लेने वालों को कभी ओ टी पी लेकर,तो कभी किसी दूसरे तरीके से जालसाज मूर्ख बनाते रहते हैं। राजनैतिक दल और सरकारें , नेता और रुपहले परदे पर अपने किरदारों में अभिनेता , सरे आम जनता से बड़े बड़े झूठे सच्चे वादे करते हुए लोगों को मूर्ख बनाकर भी अखबारों के फ्रंट पेज पर बने रहते हैं ।कभी पेड़ लगाकर अकूत धन वृ) का लालच , तो कभी आर्गेनिक फा मग के नाम पर खुली लूट , कभी बिल्डर तो कभी प्लाट के नाम पर जनता को मूर्ख बनाने में सफल चार सौ बीस , बंटी बबली , नटवर लाल बहुत हैं ।

पोलिस , प्रशासन को बराबर धोखा देते हुए लकड़ी की हांडी भी बारम्बार चढ़ा कर अपनी खिचड़ी पकाने में निपुण इन स्पाइल्ड जीनियस का मैं लोहा मानता हूं । अप्रैल का महीना नए बजट के साथ नए मूर्ख दिवस से प्रारंभ होता है , मेरा सोचना है की इस मौके पर पोलिस को मूर्ख बनाने वालों को मिस्टर नटवर , मिस्टर बंटी , मिस बबली जैसी उपाधियों से नवाजने की पहल प्रारंभ करनी चाहिए ।

इसी तरह बड़े बड़े धोखाधड़ी के शिकार लोगों को उल्लू श्रेष्ठ , मूर्ख श्रेष्ठ , लल्लू लाल जैसी उपाधियों से विभूषित किया जा सकता है ।इस तरह के नवाचारी कैंपेन से धूर्त अपराधियों को , सरल सीधे लोगों को मूर्ख बनाने से किसी हद तक रोका जा सकेगा। बहरहाल ठगी ,धोखाधड़ी ,जालसाजी से बचते हुए हास परिहास में मूर्ख बनाने और बनने में अपना अलग ही मजा है , इसलिए उल्लू बनाओ , मूर्ख दिवस मनाओ।

विवेक रंजन श्रीवास्तव , भोपाल

कला व संस्कृति

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

एक ध्यानी चित्रकार का जीवन

क्षितिंद्र नाथ मजूमदार (**31 जुलाई 1891 से 9 फरवरी 1975**), अविभाजित भारत के बंगाल प्रांत के तहत जंगीपुर अनुमंडल में निमतिता के निकट ग्राम जगताई में जन्मे, एक बहुत ही उच्च्व क्षमता के चित्रकार थे। वह अबनिंद्रनाथ टैगोर के छात्र थे। उनके चित्र मुख्य रूप से पुराणों की भक्ति और कहानियों के विषय पर आधारित थे।

क्षितिंद्रनाथ मजूमदार बंगाल स्कूल आफ आर्ट का एक प्रभावशाली व्यक्ति थे, जो **1905** और **1920** के बीच वह खुद विकसित और समृद्ध हुआ है। उन्होंने खुद को वैष्णव (हिंदू भगवान विष्णु का जिक्र) और साहित्यिक विषयों तक सीमित रखा। एक ऐसी शैली विकसित की जिसमें सुस्त, लम्बी आकृतियाँ आम तौर पर साधारण के खिलाफ दिखाई देती हैं, पेड़ों और झाड़ियों के साथ पृष्ठभूमि। इस दृश्य में अजंता और सुदूर पूर्वी तकनीकों के चित्रों का प्रभाव स्पष्ट है।

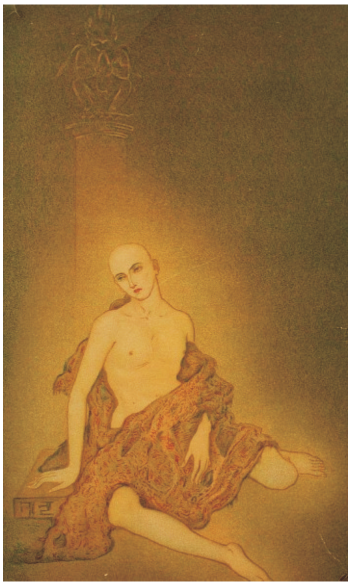

क्षितिंद्रनाथ मजूमदार बंगाल स्कूल के दिग्गज थे। अब निंद्रनाथ टैगोर के छात्र और नंदलाल बोस और असित कुमार हलदर जैसे अन्य प्रकाशकों के समकालीन, क्षितिंद्रनाथ के काम ने बंगाल स्कूल के मूल सौंदर्यशास्त्र के प्रति उनकी आजीवन प्रतिबद्धता को मूर्त रूप दिया। उनकी शैली बहुत ही शांत और सीधी थी, उनके सभी कार्यों में एक स्पष्ट ध्यान मग्नता और उच्च्व आध्यात्मिक जागृति हमेशा दिखाई देती है।

मजूमदार ने भारत में धार्मिक स्थानों की व्यापक यात्रा की और दैनिक कार्यों, धर्म/आध्यात्मिकता आदि पर अपने चित्रों को आधारित किया। उनके चित्र भारत और विदेशों में कई संग्रहालयों और निजी संग्रहकर्ताओं के संग्रह में हैं।उनकी रचनाएँ सनातन भारतीय शैली और धार्मिक चित्रों का वास्तविक प्रतिनिधित्व हैं। साथ ही वे वास्तव में आंखों के साथ-साथ आंतरिक मन के लोगों के लिए भी सुखदायक थे। क्षितिंद्र नाथ मजूमदार को १९७३ में अकादमी फैलोशिप से सम्मानित किया गया था।

लयबद्ध चित्रात्मक व्यवस्थाओं के साथ नाजुक रंग की धुलाई (वाश - पद्धत) क्षितिंद्रनाथ की हस्ताक्षर शैली को परिभाषित करती है, जैसा कि सोलहवीं शताब्दी के वैष्णव संत श्री चैतन्य महाप्रभु को चित्रित करने वाली वर्तमान पेंटिंग में देखा गया है। उदाहरण के तौर पर हम कुछ प्रस्तुतियाँ दे सकते हैं, जैसे अपने ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज विमानों के साथ अतिरिक्त ज्यामितीय पृष्ठभूमि अग्रभूमि में गीतात्मक और नाजुक रूप से प्रस्तुत आंकड़ों के लिए एकउत्तेजक विपरीत धाराएं प्रदान करती है। युवा आलोक प्राप्त संत ने अभी-अभी अपनी माँ को सन्यास या त्याग के मार्गको अपनाने के अपने निर्णय की घोषणा की है जो उनके सामने घुटने टेकती है। एक खड़ी आकृति नंगे, कटे हुए पेड़ के तने को पकड़ लेती है जो दृश्य के मार्ग को ऊंचा कर देता है और आगे आने वाली कठिनाइयों के रूपक के रूप में कार्य करता है। इस प्रकार की अलंकृत कृतियाँ भी उनकी दैवी कृतियों की निशानी हैं।

अत्यधिक सटीक, विशिष्ट, अच्छी तरह से परिभाषित अभी तक नरम और तरल रूपरेखा छवियों को एक

भारहीन, ईथर गुणवत्ता प्रदान करती है। अजंता का प्रभाव विशेष रूप से आकृतियों की पतली, क्षीण आकृति में प्रकट होता है। चमकदार समान रूप से रंगी हुई सतह पानी का उपयोग करते हुए बार-बार होने वाले रंग अनुप्रयोगों का परिणाम है, एक ऐसी तकनीक जिस पर कलाकार की विशेष महारत थी और जिसका उपयोग वह अपने कार्यों को आध्यात्मिकता या भाव के साथ करने में करता था - भारतीय कला का सार। सफेद रंग का कुशल उपयोग छवियों की अत्यधिक चालाकी को बढ़ाता है।

यह उन सराहनीय कार्यों में वास्तव में उल्लेखनीय है, अलग से सफेद रंग का उपयोग या अन्य मिट्टी के रंगों के साथ बहुत सारे पानी के साथ मिश्रण और कुछ मामलों में उन्हें पारदर्शी और अपारदर्शी बनाना। अपारदर्शी के साथ इस पारदर्शी परतों का समायोजन और उपयोग समकालीन कलाकारों के लिए भी वास्तव में उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

क्षितिंद्रनाथ मजूमदार को अक्सर एक संत-कलाकार के रूप में जाना जाता है जो कला को भक्ति का एक रूप मानते थे। कलाकार श्री चैतन्य के वैष्णववाद से बहुत प्रभावित थे, भजन गायन में प्रशिक्षित थे, भारतीय महाकाव्यों और पुराणों से किंवदंतियों की व्याख्या करते थे, और नाटक प्रस्तुतियों में भाग लेते थे। रवींद्रनाथ टैगोर भी अपने स्वयं के नृत्य और मंच नाटकों के लिए सेट डिजाइनिंग के दौरान उनसे सहायता और समर्थन लेते

क्षितिंद्र नाथ मजूमदार पूरे समय देहाती रहे, कभी भी शहरी नहीं बने, हालांकि वे अपने जीवन के अधिकांश समय शहरों में रहे। वह १८ साल तक सोसाइटी अह्फ ओरिएंटल आर्ट्स, कलकत्ता में स्कूल के कला शिक्षक और प्रिंसिपल थे और फिर वे १९४२ में (कला विभाग के अध्यक्ष के रूप में) इलाहाबाद विश्वविद्यालय गए। वहां उन्होंने १९६२ तक अपनी सेवानिवृत्ति तक पढ़ाया। ९ फरवरी, १९७५ ई. को अपने सभी कार्यों को अमर बना के, हमे छोड़कर अपनी दिव्य यात्रा शुरू कर दी है।

प्रबुद्धो घोष
पूना
सूचना सौजन्यः अनिरुद्ध मजूमदार

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

पसंदीदा रंग

होली के दिन सफ़ेद साड़ी में लिपटी सुधा आइने के सामने खड़ी होकर अपने वर्तमान को आत्मसात करने का प्रयास कर रही थी लेकिन उसका अतीत रह-रह कर उसकी आँखों के आगे आ रहा था। अभी छः महीने भी नहीं हुए थे जब वह लाल जोड़े में लेफ़्टिनेंट वीर प्रताप सिंह की दुल्हन बनकर यहाँ आयी थी। कितनी सुंदर लग रही थी वो- लाल चूड़ियाँ, माथे पर लाल बिंदी और माँग में लाल सिंदूर!

यूँ भी सुधा को रंग बहुत अच्छे लगते थे। कहती थी, ’सफ़ेद में कितना खालीपन है, ज़िंदगी तो रंगों में खिलती है!’ और इसीलिए होली उसका सबसे पसंदीदा त्योहार था। बहुत अच्छा लगता था उसे चारों ओर अलग-अलग रंग बिखरे देखकर। फिर उसे वो दिन याद आने लगा जब वह लेफ़्टिनेंट वीर से पहली बार मिली थी।बातों ही बातों में वो पूछ बैठी थी, ”आपको कौन सा रंग सबसे ज़्यादा पसंद है?“ वीर ने मुस्कुराकर कहा था, ”तिरंगे का रंग!“ बस तभी से उसे एक और रंग बहुत अच्छा लगने लगा था, देश के सिपाहियों की वदह्न का रंग- ख़ाकी!

होली के एक महीने पहले ही वीर को सरहद पर जाने का आदेश हो गया। उस रात सुधा ने वीर से पूछा, ”होली पर तो लौट आओगे ना! तुम जानते हो शादी के बाद पहली होली कितनी ख़ास होती है!“

”हम सिपाही तो देश के दुश्मनों के खून से होली खेलते हैं सुधा!“ वीर ने फिर उसी मुस्कान के साथ जवाब दिया।

सुधा के चेहरे पर डर के भाव देख वीर ने उसे सीने से लगा लिया था। होलिका दहन के दिन वीर घर लौटा- अपने पसंदीदा तिरंगे में लिपटकर!

अतीत में झांकती सुधा अचानक सिहर गयी और एक झटके से वर्तमान में लौट आयी।आज होली के दिन सब ओर रंग बिखरेंगे पर उसकी जिंदगी से रंग रूठ गए थे। उसने आइने में वीर को देखा मानो वो कह रहा हो, ”ये सफ़ेद रंग तुम पर अच्छा नह लग रहा सुधा, तुम्हें तो रंग पसंद हैं ना!“

सुधा बहुत देर तक वहीं बुत बनी खड़ी रही और फिर कुछ तय कर शोक में डूबे वीर के माता पिता के पास जाकर बोली, ”माँ-पिताजी, आप तो जानते हैं कि मुझे रंग पसंद हैं। मैं इस तरह सफ़ेद कपड़ों में नहीं रह सकती।“

वीर के माता-पिता सन्न रह गए। उन्हें लगा कि पति की मौत के सदमे में सुधा होश खो बैठी है। वीर की माँ ने प्यार से सुधा को पास बैठाया और बोली, ”बेटा मैं तेरा दुख समझती हूँ पर इतनी जल्दी दूसरी शादी....?“

सुधा एक झटके से खड़ी हो गई,”ये आप क्या कह रही हैं माँ? मैं दूसरी शादी के बारे में सोच भी नहीं सकती! मैं तो सिर्फ़ अपनी ज़िंदगी में रंग वापस लाना चाहती हूँ। वो रंग जो आपके वीर को सबसे ज़्यादा प्यारे थे-तिरंगे के रंग! माँ-पिताजी, मैं सेना में भर्ती होना चाहती हूँ और वीर की तरह देश के दुश्मनों के खून से होली खेलना चाहती हूँ। आप मुझे सेना में जाने देंगे ना!“ वीर के माता-पिता की आँखों से आँसू बह निकले और सिर गर्व से ऊँचा हो गया। सुधा के चेहरे पर भी ढ़ढ़ता के रंग उभर आए थे।

स्वीटी सिंघल ‘सखी’
बेंगलुरु, कर्नाटक

साहित्य सरोज पत्रिका की संस्थापिका

श्रीमती सरोज सिंह

की 5वीं पुण्य तिथि पर विनम्र श्रद्धांजली

अशोक कुमार सिंह पति, प्रशांत सिंह-पूजा सिंह पुत्र-पुत्रवधू ,विकास सिंह-रीवा सिह पुत्र-पुत्रवधू
अखंड प्रताप सिंह-ममता सिंह पुत्र-वधू ,प्रीति सिंह-संजय सिंह पुत्री-जमाई चम्पू व चपलू पौत्र, सीमू व चीची सुपौत्री
एवं समस्त साहित्य सरोज सरंक्षक, संपादक मंडल एवं समस्त प्रभारी पदाधिकारी साहित्य सरोज

02 अप्रैल नारीशक्ति उत्थान दिवस के रूप में